क़ुरआन और मॉडर्न साइंस

डॉ. ज़ाकिर नाइक

Scanned by CamScanner

अगर ज़मीन के सारे पेड़ क़लम बन जाएं और
समन्दर स्याही बन जाएं और उनके अलावा
और सात समन्दर भी तब (भी) अल्लाह
की बातें ख़त्म नहीं होंगी.
बेशक अल्लाह ग़ालिब और हिकमत वाला है
(लुक़मान : 27)

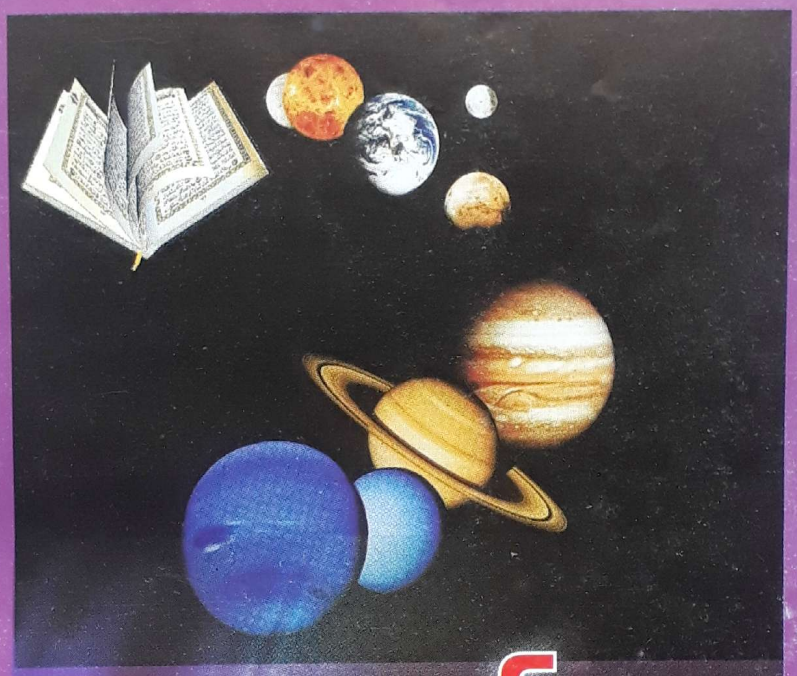

क़ुर्आन और मॉडर्न साइंस

लेखक : डॉ. ज़ाकिर नाइक
हिन्दी अनुवाद : क़मर हुसैन
सम्पादक : सलीम ख़िलजी

Scanned by CamScanner

सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

नाम किताब	**: क़ुर्आन और मॉडर्न साइंस (हिन्दी)**
मूल किताब	: Qur'an & Modern Science, Compatible or Incompatible
लेखक	**: डॉ. ज़ाकिर नाइक**
हिन्दी अनुवाद	**: क़मर हुसैन**
सम्पादन	**: सलीम ख़िलजी**
पेज	: 80
संस्करण (प्रथम)	: दिसम्बर 2008 मुहर्रम 1430 हिजरी
तादाद	: प्रथम संस्करण-2100
क़ीमत	: 40 रुपये
लेज़र टाइपसेटिंग	: ख़लीज मीडिया जोधपुर (98293-46786)
प्रिण्टिंग	: अनमोल प्रिण्ट्स जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक	: जमियत अहले हदीस राजस्थान सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-342001
फ़ोन/मोबाइल नं.	: 94141-35786, 94147-00077

Qur'an Aur Modern Science (A book about Islamic Concepts)
Written by : Dr. Zakir Naik
Hindi Translation by : Qamar Hussain Edited by : Saleem Khilji

Scanned by CamScanner

विषय-सूची

01.	परिचय	04
02.	अल क़ुर्आन	06
03.	अंतरिक्ष विज्ञान (तारों की विद्या)	09
04.	भौतिक विज्ञान	24
05.	भूगोल	26
06.	भू-गर्भ विज्ञान	30
07.	समुद्र विज्ञान	34
08.	जीव विज्ञान	41
09.	वनस्पति विज्ञान	44
10.	जन्तु विज्ञान	47
11.	शारीरिक विज्ञान	57
12.	भ्रूण विज्ञान	59
13.	सामान्य विज्ञान	76
14.	निष्कर्ष	79

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

परिचय

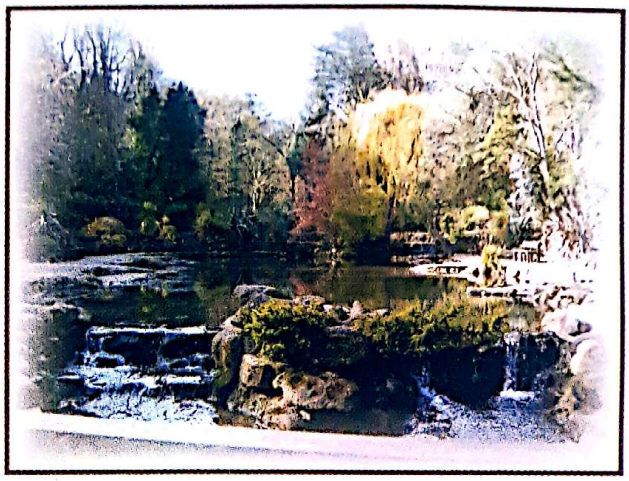

इस रू–ए–ज़मीन पर जबसे इन्सानी ज़िन्दगी का आग़ाज़ हुआ है, तब से लेकर आज तक इन्सान क़ुदरत को समझने की कोशिश करता रहा है। फिर इस कायनात में इन्सान का मुक़ाम क्या है, इसे भी जानने और समझने की कोशिश की है। इन्सान इस बात की भी तलाश में रहा है कि हमारी दुनियावी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है? हक़ की यह तलाश एक अर्सा-ए-दराज यानी सदियों में फैली हुई है और बेशुमार तहज़ीबों (सभ्यताओं) में बंटी हुई है। मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब (विभिन्न धर्मों) ने अपने तौर पर इन्सानी ज़िन्दगी को नित नये रूप दिये और इसे इस त़रह ढाला कि तारीख़ के बाब (इतिहास के अध्याय) बनते चले गये।

कुछ धर्मों की बुनियाद ऐसी किताबों पर आधारित रही जिनके बारे में यह दावा किया गया कि वे ईश्वरीय ग्रन्थ हैं यानी आसमानी किताबें हैं जबकि अन्य धर्मों ने इन्सानी अ़क़्ल, सूझ–बूझ और तजर्बात (अनुभवों) का सहारा लिया। मुस्लिमों का यह मानना है कि क़ुर्आन एक ऐसी किताब है जो मुकम्मल तौर पर अल्लाह की त़रफ़ से नाज़िल की गई है और इसीलिये वो इस्लामी अ़क़ाइद (आस्था) की बुनियाद है। मुस्लिम यह भी मानते हैं कि इस किताब में पूरी इन्सानियत के लिये हिदायत और रहनुमाई (मार्गदर्शन) और अहकामे–ख़ुदावन्दी (ईश्वरीय आदेश) है।

चूँकि क़ुर्आन का पैग़ाम मुस्तक़बिल (भविष्य) में आनेवाले हर ज़माने के लिये है, इसलिये उसकी यानी क़ुर्आन की उपयोगिता हर ज़माने में मुमकिन बनी रहनी चाहिये। क्या क़ुर्आन इस टेस्ट (कसौटी) पर पूरा उतरता है? इस किताब का असल मक़सद यही है।

मेरा इरादा एक ठोस क़िस्म की वज़ाहत करना है ताकि यह पता चले कि आज के मॉडर्न साइन्स की तहक़ीक़ात (खोजों/आविष्कारों) और क़ुर्आने–करीम की

Scanned by CamScanner

आयतों में कितना गहरा नाता है। (यानी आधुनिक विज्ञान क़ुर्आन के प्रतिकूल नहीं बल्कि अनुकूल है)

एक ज़माना था कि जब 'मौजिज़ात' या कोई ऐसी घटना जिसे मौजिज़ा (चमत्कार) समझा जाता था, वो इन्सानी अ़क़्ल पर हावी हो जाया करती थी और इन्सानी अ़क़्ल और सूझ–बूझ को पामाल कर दिया करती थी। लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि मौजिज़ा कहते किसे हैं? मौजिज़ा उस वाक़िये को कहा जाता है जो ज़िन्दगी की आम धारा से हटकर हो, जिसे इन्सान असबाब (तर्क शास्त्र) के साथ न जोड़ सके। लेकिन फिर भी किसी चीज़ को मौजिज़ा मानने या तस्लीम (स्वीकार) कर लेने से पहले सख़्त एहतियात (सतर्कता) बरतना चाहिये।

'द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' मुम्बई ने सन् 1993 में एक लेख प्रकाशित किया था। इसमें एक **'सन्त' 'पायलट बाबा'**, के बारे में लिखा गया था कि वो लगातार तीन दिन और तीन रात तक एक पानी के टैंक में डूबे हुए रहे। लेकिन उस बाबा पायलट ने रिपोर्टरों को उसके पैन्दे की जाँच करने से मना कर दिया। उन बाबा ने यह दलील दी कि माँ की उस कोख को कैसे जाँचा जा सकता है, जिसमें बच्चा परवरिश पाता है? इस त़रह बाबा कोई राज़ छुपा रहे थे। वो तो एक हथकण्डा था जिसके ज़रिये बाबा मशहूर होना चाह रहे थे। हक़ीक़त तो यही है कि कोई भी समझ–बूझ वाला शख़्स इसे मौजिज़ा तस्लीम नहीं कर सकता। अगर ऐसे झूठे करिश्मों को मौजिज़ा तस्लीम कर लिया जाए तो हमें पी.सी.सरकार को सबसे बड़ा चमत्कारी मानना होगा क्योंकि वो अपने जादुई चमत्कारों में दुनिया का मशहूरतरीन जादूगर हुआ है।

अगर कोई किताब, अपने आपको ईश्वरीय ग्रन्थ बताती है यानी मिनजानिब अल्लाह (ईश्वर की ओर से अवतरित) होने का दावा करती है, तो वह बहुत बड़े चमत्कार की दावेदार होगी। ऐसा दावा, इस नौइयत (स्तर) का होना चाहिये कि आने वाले किसी भी ज़माने में उसकी स़दाक़त (सत्यता) को परखा जा सके और तौसीक़ (पुष्टि) के लिये पैमाना वही होगा जिसका उस दौर में चलन हो।

मुस्लिम ये मानते हैं कि क़ुर्आन अल्लाह की नाज़िलकर्दा आख़री किताब है और यह अपने आप में एक मुकम्मलतरीन (परिपूर्ण) है। ये क़ुर्आन अपने आप में एक मौजिज़ा है जो सभी चमत्कारों पर भारी है, जिसे पूरी इन्सानियत के लिये रहमत बनाकर उतारा गया। लिहाज़ा अब हमें इस बात की सच्चाई और हक़ीक़त की तहक़ीक़ में लगना होगा।

डॉ. ज़ाकिर अ़ब्दुल करीम नाइक

Scanned by CamScanner

कुर्आन की चुनौती

तमाम तहज़ीबों में साहित्य और कविता व शे'र–शाइरी के ज़रिये अपनी तहज़ीब की विचारधारा पेश की जाती रही है। दुनिया ने एक ऐसा भी ज़माना देखा है जब साहित्य और कविता को बहुत ऊंचा मुक़ाम दिया जाता था, जिस त़रह आज के इस ज़माने में साइन्स और टेक्नोलॉजी को महत्त्व दिया जाता है।

Scanned by CamScanner

मुस्लिम और ग़ैर–मुस्लिम हज़रात इस बात से मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं कि क़ुर्आन एक ऐसा अ़रबी साहित्य है जो हर लिहाज़ से आ़लातरीन (श्रेष्ठतम) व बेमिषाल है। क़ुर्आन चुनौती दे रहा है, पूरी इन्सानियत को इन अल्फ़ाज़ में,

وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ
مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَن تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي
وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾

'और अगर तुम्हें इस किताब (के ईश्वरीय ग्रन्थ) होने में कोई शक हो, जिसे मैंने अपने एक बन्दे पर उतारा है तो इस (किताब में दर्ज) जैसी कोई एक ही सूरह (अध्याय) बनाकर ले आओ और अल्लाह को छोड़कर अपने तमाम मददगारों को बुला लो अगर तुम (अपने शक में) सच्चे हो। फिर तुम ऐसा न कर सको और हर्गिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जो काफ़िरों के लिये तैयार की गई है।' (अल बक़र : 23-24)

क़ुर्आन में इस चुनौती को बार–बार दोहराया गया है। चुनौती यह कि एक सूरह जो ख़ूबसूरती में, फ़रासत में, गहराई में और मफ़्हूम (भावार्थ) व मअ़नी (मतलब) में कम अज़ कम कुछ हद तक क़ुर्आन की सूरह की मुशाबिहत (समरूपता) करती हो। इस चुनौती को आज तक कोई पूरा नहीं कर सका और कभी नहीं कर सकेगा। यही इस किताब के ईश्वरीय ग्रन्थ होने की दलील है।

एक मॉडर्न सुलझा हुआ इन्सान, ऐसे किसी धार्मिक ग्रन्थ को कभी भी क़ुबूल नहीं कर सकता, जिसमें यह कहा गया हो कि यह दुनिया गोल नहीं चपटी है, भले ही वो ग्रन्थ कितनी ही अच्छी भाषा, कविता या पुर–तरन्नुम (लयबद्ध) कविता की शक्ल में हो। ऐसा इसलिये है कि आज हम ऐसे ज़माने में रहते हैं, जहाँ इन्सानी अ़क़्लो–फ़हम

Scanned by CamScanner

(समझ–बूझ), मन्तिक़ (तर्क–वितर्क) षुबूत (प्रमाण) और साइन्स को सबसे अव्वल मुक़ाम दिया जाता है। कुर्आन की ग़ैर–मामूली ख़ूबसूरती (असाधारण सुन्दरता) वाली भाषा को, ज़्यादा लोग उसके दैवीय मूल होने के षबूत में कुबूल नहीं करेंगे। इसलिये ज़रूरी है कि ईश्वरीय ग्रन्थ होने का दावा करने वाले किसी भी धार्मिक ग्रन्थ को अपने बल–बूते और समझ–बूझ व लॉजिक (तर्क) की बुनियाद पर ही क़ाबिले–कुबूल (स्वीकार्य) होना चाहिये।

नोबल प्राइज़ हासिल करने वाले भौतिक वैज्ञानिक 'अल्बर्ट आइंस्टीन' के मुताबिक़, 'साइन्स लंगड़ा है बग़ैर धर्म के और धर्म अंधा है बग़ैर साइंस के।' इसलिये हमें चाहिये कि कुर्आन को समझकर इस बात का जाइज़ा लें कि कुर्आन और मॉडर्न साइन्स में रब्त (सम्बंध) है या नहीं?

कुर्आन साइंस (Science) की किताब नहीं, निशानियों (अलामात/ Signs) की किताब है, यानी आयात। कुर्आन में 6000 से ज़्यादा आयात हैं, जिनमें से 1000 से ज़्यादा साइंस के तअल्लुक़ से हैं।

हम जानते हैं कि कई बार साइंस 'यू–टर्न' लेती है (यानी अपनी बात से फिर जाती है)। इस किताब में मैंने साइंस की उन्हीं बातों को लिया है जो आज तक अपनी जगह पर मज़बूती के साथ क़ायम हैं, न कि ऐसी बातें जिनकी ताईद (पुष्टि) न हो सकी या जो सिर्फ़ तथ्य (थ्योरी) पर आधारित है।

Scanned by CamScanner

Astronomy अन्तरिक्ष विज्ञान

(तारों की विद्या)

Scanned by CamScanner

कायनात की तख़लीक़

(बिग–बैंग : एक बहुत बड़ा धमाका)

कायनात का वजूद कैसे हुआ? इसे समझाने के लिये नक्षत्र–विज्ञानी (एस्ट्रोफ़िज़ाइसिस्ट्स) एक ऐसे **'फ़िनोमिना'** (धारणा) की तरफ़ निशानदेही करते हैं, जिसे आम तौर पर **'बिग–बैंग (एक बहुत बड़ा धमाका)'** के नाम से जाना व माना जाता है और इस फ़िनोमिना को बड़े पैमाने पर मक़्बूलियत (लोकप्रियता) हासिल हुई है। इसे सहारा (सपोर्ट) मिला है, ऐसे डाटा से जो तजर्बात और तहक़ीक़ात (ऑब्ज़र्वेशन) की बुनियाद पर आधारित है और जिसे कई दशकों में जमा (इकट्ठा) किया गया। नुजूमियों और इसे एस्ट्रोफ़िज़ाइसिस्ट्स ने कई दशकों में हासिल किया।

'बिग–बैंग (बहुत बड़ा धमाका)' की थ्योरी के मुताबिक़ यह पूरी कायनात, शुरूआती दौर में (वजूद में आने से पहले) एक बहुत बड़े गोले की तरह थी, जिसे **'प्राइमरी नेब्यूला'** कहा जाता है। फिर एक बहुत बड़ा धमाका (सेकण्डरी सेपरेशन/द्वितीयक विखण्डन) हुआ, जिसके नतीजे में गैलेक्सीज़ यानी तारों के झुण्ड (आकाश गंगाएं) वजूद में आए। फिर इनके टूटने–बिखरने के बाद तारों को वजूद मिला और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ग्रह वजूद में आए और सूरज–चाँद वग़ैरह सब बनते चले गये। कायनात की तख़लीक़, कायनात का वजूद एक अनोखी घटना थी, जो अपने आप में लाजवाब (अद्वितीय) थी और यह महज़ इत्तिफ़ाक़ से हो गया, ऐसा नहीं, हर्गिज़ नहीं!

कुर्आन ने इस तख़लीक़ यानी कायनात के वजूद में आने के बारे में यह बयान किया है,

أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا

فَفَتَقْنَٰهُمَا ۖ

'क्या इन्कार करने वालों ने यह नहीं देखा कि इससे पहले ज़मीन और आसमान सब मिले हुए थे (जैसे कि एक यूनिट हों), मैंने उन्हें अलग –अलग किया?' (अल अंबिया : 30)

Scanned by CamScanner

क़ुर्आन की इस आयत और 'बड़ा धमाका (Big Bang)' नामी साइंस की तहक़ीक़ में हैरतअंगेज़ अनुकूलता को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। ग़ौर करने की बात तो यह है कि विज्ञान की तहक़ीक़शुदा ह़क़ीक़त उस किताब में दर्ज है जो अ़रबी सहराओं (रेगिस्तानों) में 1400 से ज़्यादा साल पहले नाज़िल हुई।

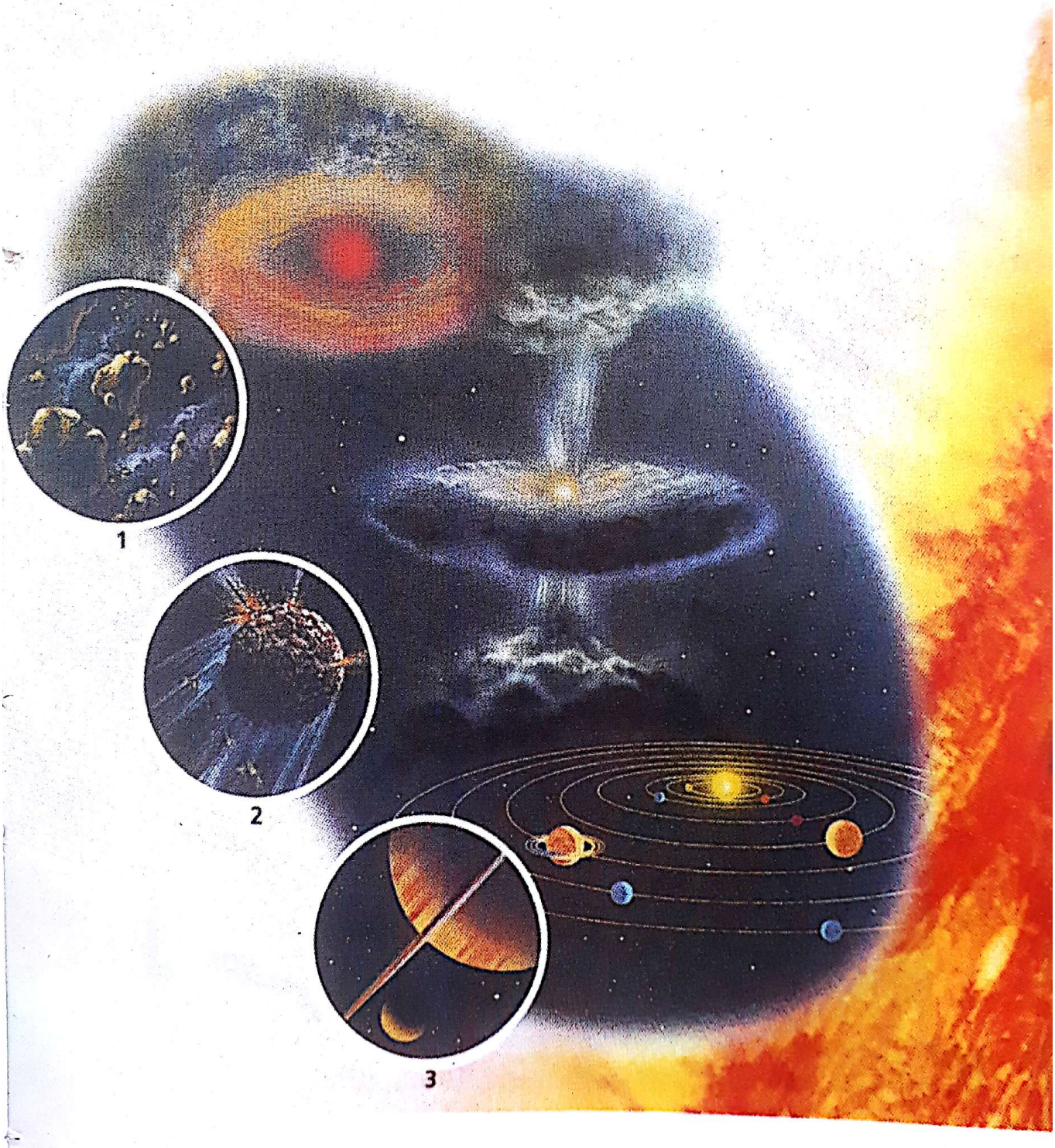

Scanned by CamScanner

गैलेक्सीज़ (यानी सितारों के झुण्ड) की तख़्लीक़ से पहले पूरी कायनात गैस का एक गोला थी

साइंसदाँ कहते हैं कि इस कायनात में गैलेक्सीज़ के वजूद में आने से पहले एक **'सेलेस्टियल शय'** मौजूद थी जो गैस की शक्ल इख़्तियार किये हुए थी। यानि यह गैलेक्सीज़ बनने से पहले भारी–भरकम गैसनुमा माद्दा या बादल मौजूद थे। उस शुरूआती सेलेस्टियल माद्दा को समझाने के लिये हम लफ़्ज़ **'धुंआ'** को इस्तेमाल कर सकते हैं, जो लफ़्ज़ गैस के मुक़ाबले ज़्यादा मौजू (उचित) है। क़ुर्आन की निम्नलिखित आयत, कायनात की उस हालत को लफ़्ज़ **'दुख़ान'** से ताबीर करती है, जिसका मतलब **'धुँआ'** होता है।

ثُمَّ ٱسْتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ وَهِىَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ٱئْتِيَا طَوْعًا

أَوْ كَرْهًا قَالَتَآ أَتَيْنَا طَآئِعِينَ ﴿١١﴾

'फिर वह (अल्लाह) आसमान की त़रफ़ पलटा जो उस वक़्त स़िर्फ़ धुँए की शक्ल में था। उस (अल्लाह) ने आसमान और ज़मीन को हुक्म दिया कि वजूद में आओ, ख़ुशी से या नाख़ुशी से। उन दोनों ने जवाब में कहा, हम मिल जाते हैं आपस में, तेरा हुक्म बजा लाते हुए फ़र्माबरदारी और रज़ामन्दी से।' (हा–मीम् अस्सज्दा : 11)

यह क़ुर्आनी आयत उस वैज्ञानिक खोज से पूरी त़रह़ रब्त और तअ़ल्लुक़ रखती है, जिसे **'बिग–बैंग (बड़ा धमाका)'** कहा जाता है। जबकि हज़रत मुह़म्मद (सल्लल

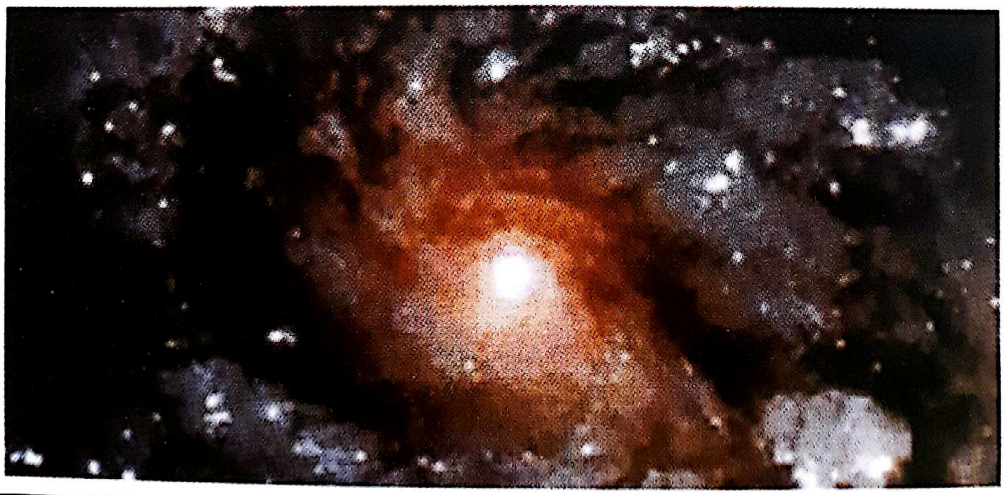

Scanned by CamScanner

लाहु अ़लैहि व सल्लम) के ज़माने में अ़रब के लोग इस साइंसी तहक़ीक़ (वैज्ञानिक खोज) से नावाकिफ़ (अनभिज्ञ) थे। ग़ौर करने की बात तो यह है कि इस ज्ञान का ज़रिया सिवाय ईश्वरीय ज्ञान के और क्या हो सकता था?

दुनिया गोल है

पुराने ज़माने में लोगों का यह मानना था कि दुनिया समतल (फ़्लैट) या चपटी है। सदियों तक लोग बहुत दूर–दराज का सफ़र का करने से डरते थे कि कहीं धरती के आख़री किनारे पर पहुँचकर गिर न जाएं। **सर फ्रांसिस ड्रेक** दुनिया के पहले शख़्स थे, जिन्होंने 1577 में जहाज से दुनिया का चक्कर लगाकर ष़ाबित किया कि दुनिया गोल है।

कुर्आन की इस आयत को समझना ज़रूरी है जो दिन और रात की लगातार तब्दीली (एक के बाद एक बदलने) के बारे में बयान करती है,

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ

'क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह दाख़िल करता है रात को दिन में और दाख़िल करता है दिन को रात में .....।' (सूरह लुक़मान : 29)

Scanned by CamScanner

लफ़्ज़ दाख़िल करना यानी मिलाना, ख़लत–मलत करना, यहाँ अ़रबी लफ़्ज़ **'युलिजु'** का इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब रात आहिस्ता–आहिस्ता दिन में दाख़िल होती है और इसी त़रह़ दिन धीरे–धीरे रात में बदलता है और यह तभी मुमकिन हो सकता है जब दुनिया गोल हो। दुनिया अगर चपटी होती तो रात, दिन में और दिन, रात में अचानक तब्दील (परिवर्तित) हो जाता। क़ुर्आन की नीचे लिखी आयत भी यही इशारा करती है कि दुनिया का आकार गोल है,

خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ بِٱلْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ ٱلَّيْلَ عَلَى ٱلنَّهَارِ
وَيُكَوِّرُ ٱلنَّهَارَ عَلَى ٱلَّيْلِ ۖ

'उस (अल्लाह) ने बनाए आसमान और ज़मीन ठीक तौर पर (यानी सही अन्दाज़ में) वह (अल्लाह) रात को ग़ालिब करता है दिन पर, और दिन को ग़ालिब करता है रात पर .....।' (सूरह ज़ुमर : 5)

क़ुर्आन की आयत में यहाँ पर अ़रबी का लफ़्ज़ **'कव्विरु'** का इस्तेमाल किया गया है जिसके मा'नी है, **'लपेटना (ओवरलेप करना)'** यानी उसके ऊपर दूसरी तह बिछाना या **'कॉइल करना'** जिस त़रह सर पर कोई साफ़ा (पगड़ी) बांधा जाता है। ओवरलैपिंग या कॉइलिंग का यह अ़मल तब ही मुमकिन हो सकता है जब दुनिया गोल हो। क़ुर्आन की नीचे लिखी आयत बतलाती है कि दुनिया का आकार कैसा है?

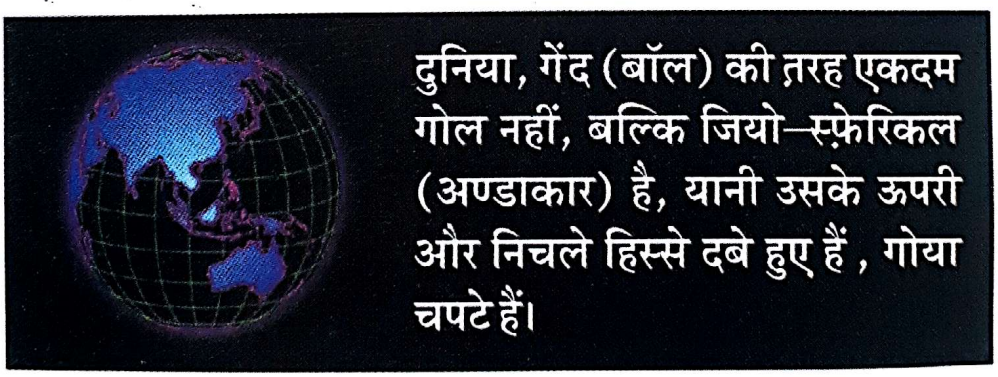

وَٱلْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَىٰهَآ ﴿٣٠﴾

'और अलबत्ता, दुनिया के ग्रह को फैलाया उसने (अल्लाह ने) चौड़ाई में।'
(सूरह नाज़ियात : 30)

Scanned by CamScanner

यहाँ पर अ़रबी लफ़्ज़ **'दहाहा'** इस्तेमाल हुआ है, जिसके मानी है 'अण्डा' यानी शुतुरमुर्ग का अण्डा। शुतुरमुर्ग़ का अण्डा दुनिया के आकार से पूरी त़रह मेल खाता है।

लिहाज़ा दुनिया के शेप (आकार) के बारे में क़ुर्आन बिल्कुल सही वजाहत करता है। हालाँकि जिस ज़माने में क़ुर्आन नाज़िल हुआ, उस ज़माने में यह माना जाता था कि दुनिया चपटी है।

चाँद की रोशनी रिफ़्लेक्टेड लाइट यानी अक़्स है

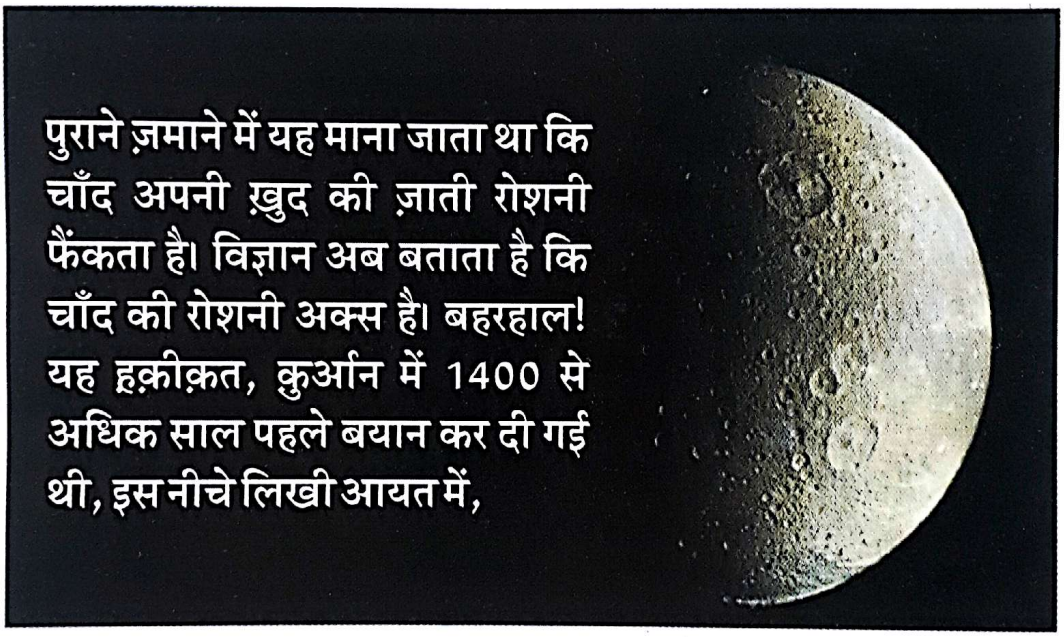

تَبَارَكَ ٱلَّذِى جَعَلَ فِى ٱلسَّمَآءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَٰجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ﴿٦١﴾

'बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह), जिसने आसमानों में ग्रह (कॉन–स्टल्लेशंस) बनाए और उनके बीच में रखा एक चिराग़ और रोशनी फैंकनेवाला एक चाँद।' (अल फ़ुर्क़ान : 61)

क़ुर्आन में सूरज के लिये कहीं अ़रबी लफ़्ज़ **'शम्स'** इस्तेमाल हुआ है। कहीं

Scanned by CamScanner

इसे '**सिराज**' के लफ़्ज़ से ताबीर किया गया, जिसके मा'नी टॉर्च है या फिर '**वह्हाज**' से ताबीर किया गया है जिसके मा'नी, चकाचौंध कर देनेवाला दहकता हुआ अंगारानुमा चिराग़ या फिर '**ज़िया**' का इस्तेमाल किया गया है जिसके मानी है '**तेज़ चमकने वाला पुञ्ज (ग्लोरी)।**'

ये सभी वज़ाहतें (उपमाएं) सूरज के लिये बिल्कुल उचित हैं, क्योंकि सूरज अपने अन्दर की भट्टी से शदीद (तीव्रतम) गर्मी और रोशनी ख़ारिज (उत्सर्जित) करता है। चाँद के लिये अरबी में लफ़्ज़, '**क़मर**' है और उसे कुर्आन में '**मुनीर**' भी कहा गया है यानी कि नूर (रोशनी) देने वाला।

एक बार फिर कुर्आन की बात पूरे तौर पर सच्चाई से मेल खाती है। चाँद के अस़ली कुदरती रूप को उजागर करती है कि चाँद की अपनी कोई रोशनी नहीं है बल्कि वह ऐसी शय है जो सूरज की रोशनी को रिफ़्लेक्ट करती है (अक्स फैंकती है)। कुर्आन में चाँद को कहीं भी '**सिराज**' के लफ़्ज़ से ताबीर नहीं किया गया, और न ही '**वह्हाज**' या '**ज़िया**' के अल्फ़ाज़ से। कुर्आन में सूरज को कहीं भी '**नूर**' या '**मुनीर**' के अल्फ़ाज़ से ताबीर नहीं किया गया।

इससे षाबित होता है कि कुर्आन, सूरज की रोशनी में और चाँद की रोशनी में फ़र्क़ करता है। कुर्आन की नीचे लिखी आयतों को समझें जो सूरज और चाँद की रोशनियों के बारे में हैं,

أَلَمْ تَرَوْا۟ كَيْفَ خَلَقَ ٱللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَجَعَلَ ٱلْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ ٱلشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

'क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने कैसे सात आसमान बनाए तह–ब–तह यानी एक के ऊपर दूसरा। और चाँद को उनके बीच रोशनी बनाया, और सूरज को एक (चमकता हुआ) चराग़ बनाया?'

(सूरह नूह : 15-16)

Scanned by CamScanner

सूरज गर्दिश (भ्रमण) करता है

एक लम्बे अर्से तक यूरोप के फ़िलॉस्फ़र (दार्शनिक) और साइंसदाँ (वैज्ञानिक) यही मानते थे कि ज़मीन कायनात का केन्द्र है जो अपनी जगह स्थिर है और बाक़ी सभी ग्रह–उपग्रह दुनिया के इर्द–गिर्द घूम रहे हैं, जिनमें सूरज भी शामिल है। मग़रिबी तहज़ीब (पश्चिमी सभ्यता) में कायनात के बारे में यह जियो–सेण्ट्रिक कन्सेप्ट (भू–केन्द्रित धारणा) क़ायम रही। सन् 1512 में निकोलस कोपरनिकस ने सौरमण्डल के ग्रहों की गर्दिश के बारे में अपनी तीव्र गति सिद्धान्त वाली (हीलियो–सेण्ट्रिक थ्योरी) पेश की। इस थ्योरी ने इस बात की तस्दीक़ (पुष्टि) की कि सौर–मण्डल के बीच सूरज ठहरा हुआ है और सारे ग्रह उसके इर्द–गिर्द घूम रहे हैं।

सन् 1609 में एक जर्मन साइंसदाँ जोहन्ज़ कॅपलर ने अपनी किताब **'एस्ट्रोनोमिया नोवा'** प्रकाशित की। उसमें उसने यह नतीजा पेश किया कि न सिर्फ़ तमाम ग्रह सूरज के इर्द–गिर्द अपनी अण्डाकार (इलिप्टिकल) धुरी में घूम रहे हैं बल्कि वे अपनी–अपनी धुरी (एक्सिस) पर अपनी–अपनी रफ़्तारों गर्दिश भी कर रहे हैं।

इस जानकारी से यूरोपियन साइंसदानों के लिये यह बात मुमकिन हो सकी कि रात–दिन की तर्तीब सहित सोलर सिस्टम की कई बारीकियों को सही तौर पर समझकर दूसरों को समझा सके।

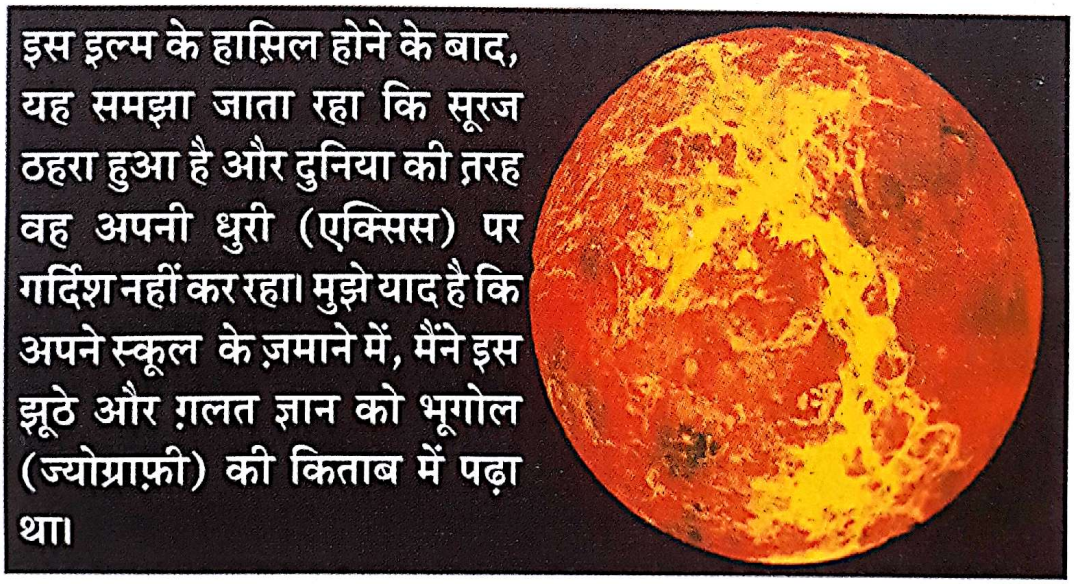

Scanned by CamScanner

कुर्आन की नीचे लिखी आयत समझें,

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ
يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

'वह अल्लाह की ज़ात है जिसने रात और दिन बनाए, और सूरज व चाँद बनाए; सभी ग्रह तैर रहे हैं, अपने–अपने फ़लक़ (दायरानुमा मिदार) में।'

(अल अंबिया : 33)

इस कुर्आनी आयत में अरबी लफ़्ज़ **'यस्बहून'** इस्तेमाल हुआ है। लफ़्ज़ **'यस्बहून'** लफ़्ज़ **'सबाहा'** से निकला है जिसमें किसी गतिमान वस्तु को उजागर देखकर मन में गति की जो कल्पना पैदा होती है, वही इस लफ़्ज़ का मतलब है। अगर इस लफ़्ज़ को ज़मीन के लिये इस्तेमाल किया जाए तो इसका मतलब यह नहीं होगा कि वो **'रोल'** कर रही है या **'लुढ़क'** रही है, बल्कि इसके मा'नी होंगे कि ज़मीन चल रही है या दौड़ रही है। अगर इस लफ़्ज़ को उस आदमी के लिये इस्तेमाल किया जाए जो पानी में है तब उसका मा'नी यह नहीं होंगे कि वह पानी की सतह पर पड़ा है बल्कि उसके मा'नी होंगे कि वह पानी में तैर रहा है। इसी तरह अगर आप सूरज जैसे किसी ग्रह के लिये लफ़्ज़ **'यस्बह'** का इस्तेमाल करेंगे तो उसके मा'नी सिर्फ़ यह नहीं होंगे कि सूरज ख़ला (अंतरिक्ष) में उड़ रहा है बल्कि यह होंगे कि वह अंतरिक्ष में उड़ने या तैरने के साथ–साथ गर्दिश (भ्रमण) भी कर रहा है।

स्कूल की अक्सर व बेशतर किताबों में यह हक़ीक़त दर्ज की गई है कि सूरज अपनी धुरी (Axis) पर चक्कर लगा रहा है। सूरज के अपनी धुरी पर चक्कर को एक ऐसे यंत्र के ज़रिये ष़ाबित किया जा सकता है जो सूरज की तस्वीर (प्रतिबिम्ब) को किसी मेज पर डाल सके। ताकि बिना आँखों पर ज़ोर पड़े सूरज की तस्वीर को नंगी आँखों से देखा जा सके और उसका जाइज़ा लिया जा सके।

यह भी देखा गया है कि सूरज में जो धब्बे हैं वो हर 25 दिन में एक बार अपनी गर्दिश मुकम्मल करते हैं यानी सूरज अपनी धुरी पर एक गर्दिश पूरा करने में तक़रीबन 25 दिन लेता है। हक़ीक़त में सूरज अंतरिक्ष (Space) में तक़रीबन 150 मील प्रति सैकण्ड की रफ़्तार से तैरता है और हमारी मिल्की वे गैलेक्सी केन्द्र (Center) के

Scanned by CamScanner

इर्द–गिर्द एक चक्कर पूरा करने में (सूरज) तक़रीबन 200 लाख साल का वक़्त लेता है।

لَا ٱلشَّمْسُ يَنۢبَغِى لَهَآ أَن تُدْرِكَ ٱلْقَمَرَ وَلَا ٱلَّيْلُ سَابِقُ ٱلنَّهَارِ ۚ
وَكُلٌّ فِى فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾

'सूरज को इजाज़त नहीं कि वह चाँद को जा पकड़े और न ही रात आगे बढ़ सकती है दिन से; हर एक चला जा रहा है अपनी मुक़र्रर कर्दा राह पर (यानी अपने मिदार पर)।' (सूरह यासीन : 40)

इस आयत में उस अहमतरीन हक़ीक़त का ज़िक्र बहुत पहले से मौजूद है जो आधुनिक नक्षत्र विज्ञान (Modern Astronomy)को अब पता चला है यानी सूरज और चाँद के अन्तरिक्ष में अपनी धुरी पर धूमते हुए अपने तयशुदा रास्ते पर लगातार चले जा रहे हैं।

आधुनिक विज्ञान ने उस जगह का सही–सही ठिकाना खोज लिया है जिसकी त़रफ़ सूरज अपने सौर–मण्डल (Solar System) को साथ लिये हुए सफ़र कर रहा है। उसे **'सोलर एपेक्स'** नाम दिया गया है। ह़क़ीक़त में सौर–मण्डल चल रहा है अंतरिक्ष में उस पॉइण्ट (ठिकाने) की त़रफ़, जो **'कॉन्सटलेशन ऑफ़ हरक्यूलस (हरक्युलिस का झुरमुट)'** में मौजूद है और उस पॉइण्ट का सही ठिकाना अब कोई राज़ नहीं रहा बल्कि एक स़ाबितशुदा हक़ीक़त बन गया है।

चाँद को अपनी धुरी पर गर्दिश करने में उतना ही वक़्त लगता है जितना कि उसे दुनियावी ग्रह के इर्द–गिर्द चक्कर लगाने में लगता है। वह एक चक्कर पूरा करने में तक़रीबन 29.5 दिन लेता है।

क़ुर्आन की आयतों में जो वैज्ञानिक सटीकपन (Scientific Accuracy) और सूक्ष्मता (बारीकी) है, वह एक हैरत–अंगेज़ करिश्मा है। लिहाज़ा क्या हमें इस सवाल पर ग़ौर नहीं करना चाहिये कि क़ुर्आन में जो साइंटिफ़िक इ़ल्म पहले से भरा पड़ा है, उस इ़ल्म का मर्क़ज़ (Source) क्या था? और वह इ़ल्म आख़िर क़ुर्आन मजीद में कहाँ से आया?

Scanned by CamScanner

एक मुक़र्रर मुद्दत के बाद सूरज बुझ जाएगा

सूरज की रोशनी एक रासायनिक प्रक्रिया (Chemical Process) की वजह से है, जो उसकी सतह पर पिछले पाँच सौ करोड़ सालों से होती चली आ रही है। आइन्दा मुस्तक़बिल (Future) में एक वक़्त आएगा जब यह प्रक्रिया (Process) ख़त्म हो जाएगी और सूरज बिल्कुल बुझ जाएगा, जिसके नतीजे में ज़मीन पर से ज़िन्दगी का ख़ात्मा हो जाएगा।

सूरज हमेशा नहीं रहेगा, इसका अन्त तय है, इसके बाबत क़ुर्आन यूँ बयान करता है,

وَٱلشَّمۡسُ تَجۡرِي لِمُسۡتَقَرّٖ لَّهَاۚ ذَٰلِكَ تَقۡدِيرُ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡعَلِيمِ ﴿٣٨﴾

'और सूरज के लिये जो मुक़र्रर रास्ता है वो उसी पर दौड़ रहा है; यानी उसके लिये फ़ैसला कर दिया गया है, उस अज़ीमुश्शान ताक़तवर की जानिब से जो सब-कुछ जानता है।' (सूरह यासीन : 38)

यहाँ जो अरबी लफ़्ज़ **'मुस्तक़र'** इस्तेमाल हुआ है, जिसके मा'नी तयशुदा मुक़ाम या तयशुदा वक़्त। लिहाज़ा क़ुर्आन कहता है कि सूरज दौड़ रहा है एक तयशुदा मुक़ाम की तरफ़, और दौड़ता रहेगा एक मुक़र्ररकर्दा वक़्त तक, यानी उसके बाद या तो उसका ख़ात्मा हो जाएगा या फिर वह हमेशा के लिये बुझ जाएगा।

Scanned by CamScanner

तारा मण्डल (इण्टर–स्टेल्लार) के बीच मूल तत्व की मौजूदगी

तर्तीबशुदा नक्षत्र–व्यवस्था (Astronomical System) के बाहर जो शून्य (Space) मौजूद है वो वैक्यूम (निर्वात/खालीपन) की शक्ल में नज़र आता है। इस वैक्यूम को अंतरिक्ष कहा जाता है। नक्षत्र विज्ञान ने ग्रह समूह के बीच मूल तत्व के वजूद का पता लगाया है जिन्हें **'प्लाज़्मा (द्रव्य जीवाणु)'** कहा जाता है, जो मुकम्मल तौर पर आयनित (Ionised) गैस से बने हैं जिनमें फ्री इलेक्टॉन्स और पॉज़िटिव आयन्ज़ की बराबरी की संख्या में मौजूद हैं। प्लाज़्मा को माद्दाह की चौथी शक्ल भी कहा जाता है जो तीन जाने–माने माद्दाह यानी ठोस (Solid), द्रव (Liquid) और गैस (Gas) के अलावा हैं। क़ुर्आन की नीचे लिखी आयत में तारा मण्डल इस इण्टर–स्टेल्लार मेटीरियल (ग्रह के बीच मूल तत्व) की मौजूदगी का ज़िक्र करती है,

ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

'वह (अल्लाह) जिसने बनाए आसमान और ज़मीन और उन सबको जो कुछ उनके बीच हैं।' (सूरह फ़ुर्क़ान : 59)

अगर कोई यह कहे कि कहे कि इण्टर–स्टेल्लार गैलेक्टिक मेटीरियल की मौजूदगी का पता 1400 से अधिक साल पहले लग चुका था तो क्या दुनिया वालों की नज़र में यह वाक़ई एक हैरतअंगेज़ बात नहीं है।

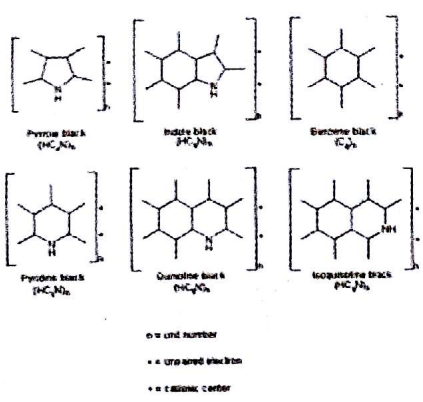

Scanned by CamScanner

कायनात का फैलाव

सन् 1925 में **'एडविन हबल'** नाम से मशहूर एक अमेरिकी खगोलशास्त्री ने एक तजर्बाती षबूत पेश किया कि सारी गैलेक्सीज़ एक–दूसरे से दूर भाग रही हैं, जिससे यह मालूम होता है कि कायनात का फैलाव हो रहा है। कायनात के फैलाव की बात अब साइंटिफ़िक हक़ीक़त का रूप इख़्तियार कर चुकी है। कायनात की क़ुदरत (प्रकृति Nature) के बारे में क़ुर्आन यूँ कहता है,

وَٱلسَّمَآءَ بَنَيْنَٰهَا بِأَيْيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

' और मैंने ज़मीन को बिछाया और मैं बहुत ही उम्दा बिछानेवाला हूँ।'

(सूरह ज़ारियात : 47)

अ़रबी लफ़्ज़ **'मूसिऊन'** का सही तर्जुमा, **'बढ़ाया जाना'** होता है और यह कायनात के बढ़ते हुए फैलाव की त़रफ़ निशानदेही करता है।

स्टीविन हॉकिंग अपनी किताब **'वक़्त की मुख़्तसर तारीख़ (A Brief History of Time)'** में लिखते हैं, 'कायनात का फैलाव जारी है, इस बात की खोज बीसवीं सदी की सबसे बड़ी वैज्ञानिक क्रान्ति (इण्टलेक्चुअल रिवोल्यूशंस) में से एक अहमतरीन खोज है।' जबकि क़ुर्आन ने कायनात के फैलाव की बात का ज़िक्र उस वक़्त कर दिया जब इन्सान ने टेलीस्कॉप बनाना तो दूर उसकी कल्पना भी नहीं की थी।

कुछ लोग कह सकते हैं कि क़ुर्आन में जो नक्षत्रों से सम्बंधित सच्चाइयां मौजूद हैं वो कोई त़अज्जुब की बात नहीं क्योंकि अ़रब लोग इल्मे–नुजूम के क्षैत्र में आगे बढ़े हुए थे। यह सही है कि अ़रब लोग इल्मे–नुजूम में आगे बढ़े हुए थे लेकिन वो इस बात को नहीं समझ पाए कि इ़ल्मे–नुजूम ने जो तरक़्क़ी की थी क़ुर्आन उससे सदियों पहले नाज़िल हो चुका था। इसके अ़लावा नक्षत्र विज्ञान के बारे में जो वैज्ञानिक सच्चाइयां (Facts) ऊपर ज़िक्र की गईं, उनमें से बेशतर बातें अ़रबों की जानकारी में नहीं थीं; वह

Scanned by CamScanner

यह भी नहीं जानते थे कि **'बिग बैंग'** नामी थ्योरी क्या है? वो लोग तो उस वक़्त भी इन बातों से नावाकिफ़ थे जब साइंटिफ़िक तरक़्क़ी में वह बड़ी ऊँचाइयों पर थे। लिहाज़ा ये साइंसी हक़ीक़तें जो क़ुर्आन में बयान की गई हैं, वो अ़रबों की इल्मे–नुजूम में महारत की वजह से नहीं थी, बल्कि हक़ीक़त इसके विपरीत है। अ़रबों ने जो इल्मे–नुजूम में तरक़्क़ी की है वो क़ुर्आन में एस्ट्रॉनोमी का जो ख़ास़ मुक़ाम है, उसकी वजह से थी।

Scanned by CamScanner

Physics भौतिक विज्ञान

परमाणु (एटम) से भी छोटे कणों का वजूद

पुराने ज़माने में 'थ्योरी ऑफ़ एटॉमिज़्म' (परमाणु सिद्धान्त) के नाम से एक थ्योरी (परिकल्पना) प्रचलित थी, जिसे बहुत मक़्बूलियत (लोकप्रियता) हासिल हुई थी। यह थ्योरी शुरूआत में ग्रीक के एक मशहूर शख़्स 'डेमोक्राइटिस' ने 2300 साल पहले पेश की। डेमोक्राइटिस और जो लोग उसके बाद आए इन्होंने यह माना कि माद्दाह (पदार्थ) की सबसे छोटी इकाई 'परमाणु' (Atom) है। अरब लोग भी इसी थ्योरी को मानते थे। अरबी लफ़्ज़ 'ज़र्रह' से मुराद यही 'परमाणु' लिया जाता था।

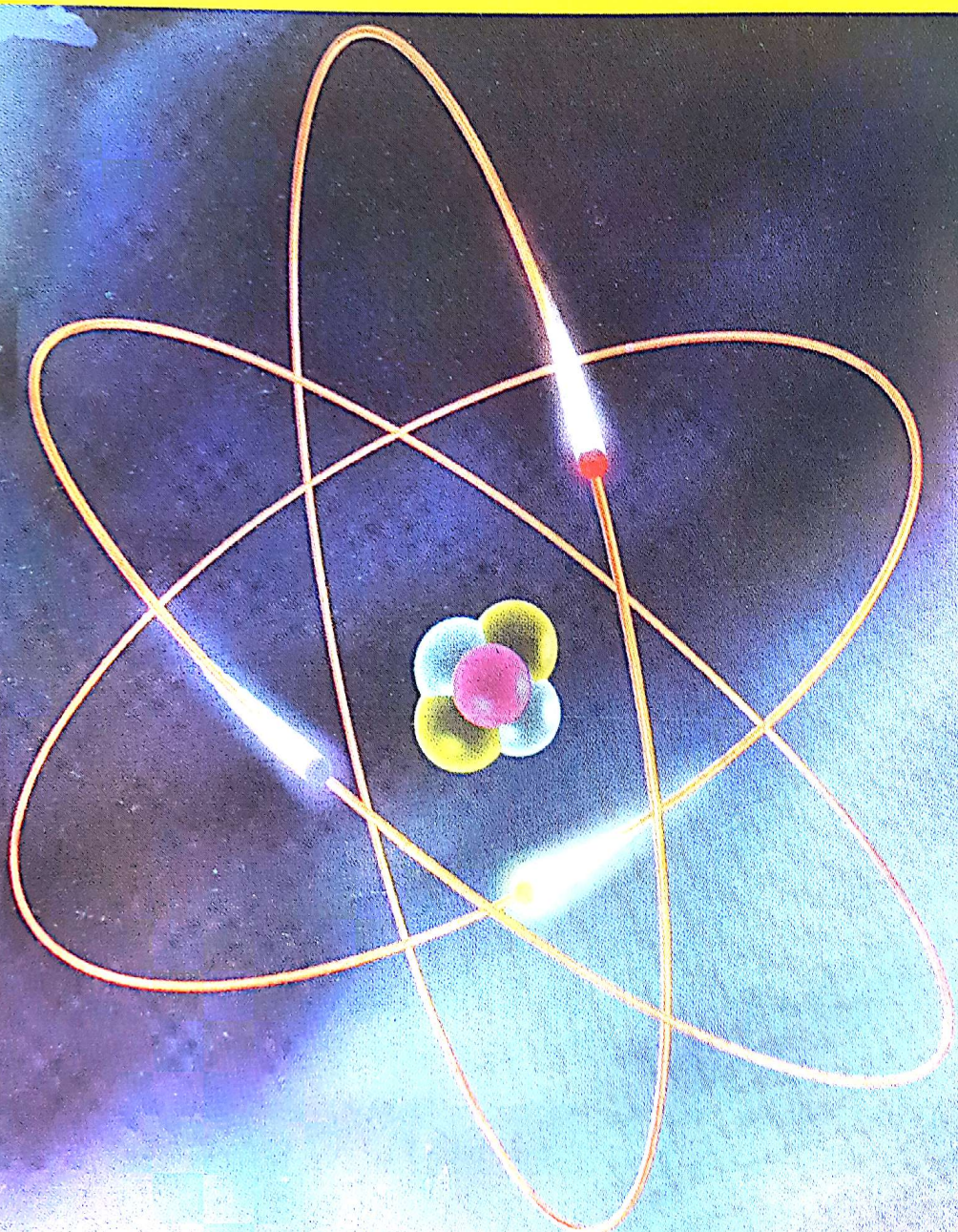

Scanned by CamScanner

हाल ही में मॉडर्न साइंस ने इस बात की खोज निकाली है कि 'एटम' को भी स्पिलिट (विखण्डित) किया जा सकता है यानी तोड़ा जा सकता है। यह बीसवीं सदी की खोज है कि एटम के मज़ीद टुकड़े किये जा सकते हैं। चौदह सौ साल पहले अ़रबों के लिये यह बात अनजानी और अनोखी व एक असम्भव कल्पना थी।

किसी अ़रब के लिये 'ज़र्रह' वह आख़री हद (Limit) मानी जाती थी जिसके आगे नहीं बढ़ा जा सके। कुर्आन की नीचे लिखी आयत इस हद को क़ुबूल करने से इन्कार करती है,

وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَا تَأْتِينَا ٱلسَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّى لَتَأْتِيَنَّكُمْ
عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى
ٱلْأَرْضِ وَلَآ أَصْغَرُ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرُ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ
مُّبِينٍ ﴿٣﴾

'कुछ इन्कार करने वाले कहते हैं कि हम पर वह घड़ी (क़यामत) कभी नहीं आएगी। कहो; क़सम है मेरे आ़लिमुल ग़ैब (अन्तर्यामी) रब की, वह तुम पर ज़रूर आकर रहेगी। उसे ज़र्रा बराबर कोई चीज़ न आसमानों में छुपी हुई है, न ज़मीन में। न ज़र्रा से बड़ी और न उससे छोटी। सब–कुछ एक खुली किताब में दर्ज है।' (सूरह सबा : 3)

यह आयत अल्लाह की '**ओमनीसियंस**' (असीमित ज्ञान की ख़ूबी) की त़रफ़ इशारा कर रही है, क्योंकि उसका इल्म सब चीज़ों पर हावी है, चाहे वह चीज़ छुपी हुई हो या ज़ाहिर हो। आयत में आगे चलकर इस बात का ज़िक्र किया गया है कि अल्लाह को हर शय का पता है, उन तमाम चीज़ों के समेत जो '**ज़र्रह**' से छोटी हो या बड़ी। लिहाज़ा इस आयत से यह बात वाज़ेह हुई कि '**एटम**' से भी छोटी शय वजूद रखती है। यह वो हक़ीक़त है जो मॉडर्न साइंस ने हाल के ज़माने (वर्तमान काल) में खोज की है।

Scanned by CamScanner

पानी का चक्र (वॉटर साइकल)

सन् 1580 में बर्नार्ड पैलिस्सी वो पहला शख़्स था जिसने वॉटर साइकल के मौजूदा कन्सेप्ट को समझाया। उन्होंने समझाया कि पानी किस तरह भाप की शक्ल इख़्तियार करता है समन्दरों के पानी से और फिर ठण्डा होकर बादलों की शक्ल इख़्तियार करता है। यह बादल ज़मीन की तरफ़ पेशरफ़्त करते हैं और वहाँ बुलन्दी को पहुंचकर फिर संघनित (Condence) होकर बरसात की शक्ल में बरसते हैं। यह पानी झीलों, तालाबों और नहरों से होता हुआ फिर समन्दरों में जमा हो जाता है। यह चक्र लगातार चलता रहता है। इसे वाटर साइकल कहा जाता है। ईसा से सात सदी पहले 'थेल्ज़ ऑफ़ माइलिटस' ने इस बात को माना कि समन्दर की सतह पर भापनुमा स्प्रे को तेज़ हवाएं उचक लेती हैं और उन्हें ज़मीन की तरफ़ उठा ले जाती हैं ताकि वो बारिश की शक्ल में बरसें।

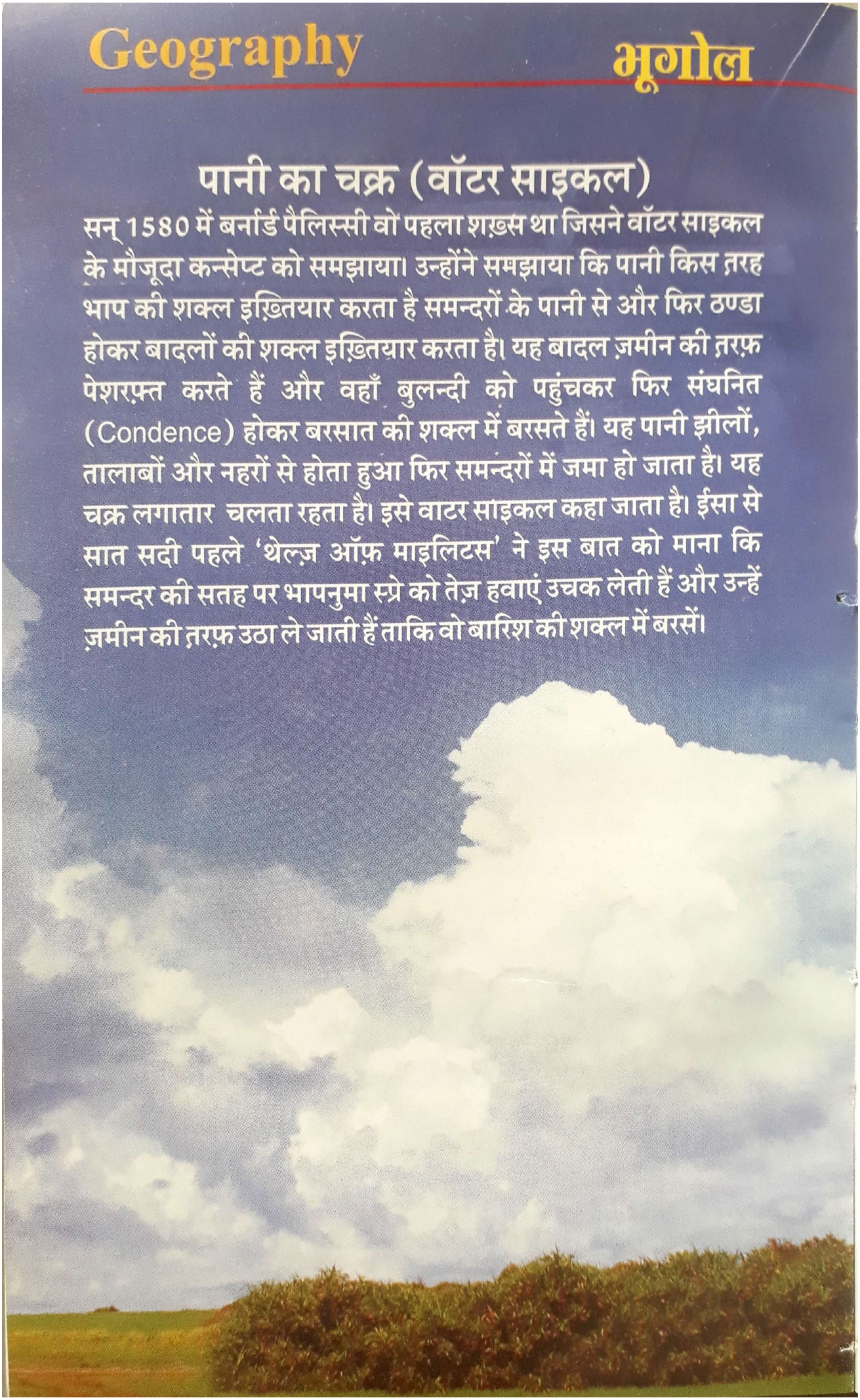

Scanned by CamScanner

पुराने ज़माने में लोगों को भूमिगत (अण्डरग्राउण्ड) पानी के ज़ख़ीरे का ज़रिया मालूम नहीं था। वे समझते थे कि समन्दर का पानी तेज़ हवाओं के दबाव की वजह से ज़मीन के अन्दर पैवस्त हो जाया करता है। वो ये भी मानते थे कि ज़मीन के अन्दर पैवस्त पानी फिर दोबारा एक ख़ुफ़िया रास्ते (यानी **'द ग्रेट एबिस्स)** से ज़मीन में समा जाता है।' उनका यह भी भ्रम था कि पानी ग्रेट एबिस्स से गुज़रता है उसे प्लाटो के ज़माने से **'टारटेरस'** कहा जाता रहा। 18वीं सदी के एक महान विचारक (Thinker) डिस्कार्टेज ने भी इसी ख़याल की तस्दीक़ की। यही विचारधारा 19वीं सदी तक एरिसटोटल के ज़माने तक क़ायम थी। उसकी थ्योरी के मुताबिक़ पानी की भाप को ऊँची ठण्डी पहाड़ियों की गुफ़ाओं (Cool mountain caves) में संघनित किया जाता है और फिर वो पानी झीलों और तालाबों को सैराब करने का ज़रिया बनता है। आज हम जानते हैं कि बारिश का पानी ज़मीन पर गिरकर ज़मीन की दरारों में से अन्दर जज़्ब (पैवस्त) हो जाता है और उसी वजह से ज़मीन के अन्दर पानी का ज़खीरा होता है।

इस वॉटर साइकल का ज़िक्र कुर्आन की इस आयत में यूं बयान हुआ है,

أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ أَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهُۥ يَنَٰبِيعَ فِى ٱلْأَرْضِ
ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِۦ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَٰنُهُۥ

'क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और

Scanned by CamScanner

फिर उसे सोतों, चश्मों और नदी–नालों की शक्ल में ज़मीन के अन्दर जारी किया। फिर उस पानी के ज़रिये त़रह–त़रह की फ़सले निकालता है।'
(सूरह ज़ुमर : 21)

وَيُنَزِّلُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَيُحۡيِۦ بِهِ ٱلۡأَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَآۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَٰتٖ لِّقَوۡمٖ يَعۡقِلُونَ ٢٤

'और वो (अल्लाह) नाज़िल करता है बारिश को आसमान से और उसके ज़रिये हयात (ज़िन्दगी) बख़्शता है मुर्दा पड़ी ज़मीन को, बेशक इनमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो अ़क़्ल रखते हैं।'

وَأَنزَلۡنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءَۢ بِقَدَرٖ فَأَسۡكَنَّٰهُ فِي ٱلۡأَرۡضِۖ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابِۭ
بِهِۦ لَقَٰدِرُونَ ١٨

(सूरह रूम : 24)

'और आसमान से मैंने ठीक हिसाब के मुताबिक़ एक ख़ास पैमाने में पानी उतारा और उसको ज़मीन में ठहरा दिया। मैं इस (पानी) को जिस त़रह चाहूँ ग़ायब कर सकता हूँ।'
(अल मोमिनून : 18)

1400 से अधिक साल पहले क़ुर्आन के अ़लावा कोई ऐसी किताब मौजूद नहीं थी जिसमें पानी के चक्र को इतने ठीक अन्दाज़ में समझाया गया हो।

Scanned by CamScanner

तेज़ हवाओं के ज़रिये बादलों में पानी का भराव

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ

'और मैं भेजता हूं तेज़ उपजाऊ हवाएं, फिर पानी को आसमान से नाज़िल होने का इंतज़ाम करता हूं और इस तरीक़े से तुम्हारे लिये ख़ूब पानी मुहैया करता हूं।'

(सूरह हिज्र : 22)

यहाँ जो अरबी लफ़्ज़ **'लवाक़िह'** का इस्तेमाल हुआ है वो **'लक़िह'** का जमा (बहुवचन) है, जो **'लक़ाहा'** से बना है जिसके मा'नी है उपजाऊ या **'गर्भ–धारक।'** यहाँ **'लवाक़िह'** से मुराद यह लिया जाएगा कि तेज़ हवाएं बादलों को धकेलती हैं और साथ ही उनकी सघनता को बढ़ाती है, जिसके कारण बिजली की कड़क पैदा होती है और उसके नतीजे में बारिश होती है।

कुर्आन में ऐसी ही एक और मिषाल मौजूद है,

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ
كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ
فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾

'वो अल्लाह ही तो है जो तेज़ हवाओं को भेजता है जो बादलों को उठाती हैं; फिर वो जैसा चाहता है उन्हें आसमान में फैलाता है और उनको टुकड़ों–टुकड़ों में बांटता है, यहाँ तक कि फिर तुम देखते हो कि उनमें से बारिश के क़तरे निकलते हैं; और फिर जब अल्लाह जिन बन्दों पर चाहता है पानी बरसाता है तो वो ख़ुशी से झूम उठते हैं।'

(सूरह रूम : 48)

कुर्आन में बयान की गई यह तफ़्सील मॉडर्न डाटा और हाइड्रोलॉजी से बिल्कुल ठीक मुताबिक़त रखती है। वॉटर साइकल को कुर्आन की बेशुमार आयतों में समझाया गया है जिनमें कुछ आयतें नीचे लिखे अनुसार हैं,

अल बक़र : 19, अल अ़राफ़ : 57, अर् रअ़द : 17, अल फ़ुर्क़ान : 48-49, सूरह यासीन : 34, सूरह काफ़ : 9-11, अल वाक़िया : 68-70, अल मुल्क : 30, अत् तारिक़ : 11

Scanned by CamScanner

Geology

भू गर्भ विज्ञान

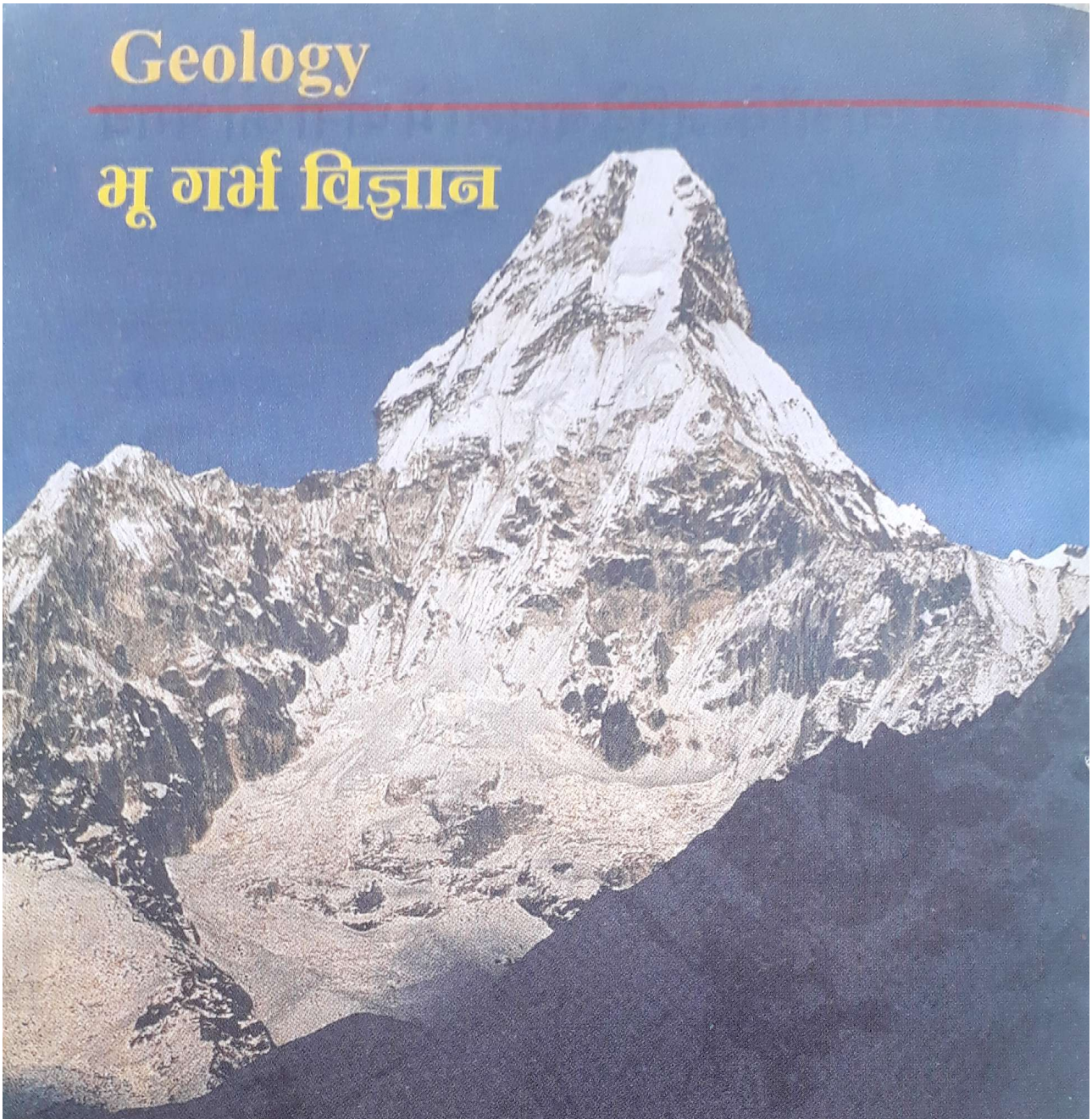

पहाड़ खूण्टे के समान हैं

जियोलॉजी (भू–गर्भ विज्ञान) में फोल्डिंग का फिनोमिनन एक ताज़ातरीन खोजी गई हक़ीक़त है। बड़े–बड़े पहाड़ों का वजूद फ़ोल्डिंग की क्रिया के कारण होता है। ज़मीन की ऊपरी सतह, जिस पर हम रहते हैं, वो एक ठोस कवर (शैल) की तरह है जबकि अन्दरूनी परतें गरम और द्रव (Fluid) है और इसी कारण किसी जानदार का उसमें ज़िन्दा रहना मुमकिन नहीं। यह भी जाना गया है कि पहाड़ों की मज़बूती इसी 'फ़िनोमिनन ऑफ़ फ़ोल्डिंग' से जुड़ी हुई है क्योंकि इन्हीं फ़ोल्ड्स के कारण पहाड़ों को उनके ठहराव के लिये फ़ाउण्डेशन (बुनियादें) मुहैया (प्रदान) करती हैं।

Scanned by CamScanner

जियोलॉजिस्ट्स हमें बताते हैं कि दुनियावी ज़मीन से निकलने वाली त्रिज्या (अर्ध–व्यास Radius) तक़रीबन 3750 मील है और उसकी ऊपरी सतह (क्रस्ट) जिस पर हम रहते हैं वो बहुत पतली है यानी एक से 30 मील मोटी। चूँकि यह ऊपरी सतह (क्रस्ट) बहुत पतली है, इसके हिलने के इम्कानात (सम्भावनाएं) बहुत ज़्यादा हैं। लिहाज़ा पहाड़ ज़मीन पर खूण्टों का काम करते हैं, टेण्ट की कीलों जैसा, जो ज़मीन की ऊपरी सतह को स्थिरता प्रदान करते हैं ताकि वो मुस्तहकम (सुदृढ़) रह सके।

क़ुर्आन ने इसी चीज़ को हू–ब–हू इस त़रह समझाया है,

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ۝٦ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۝٧

'क्या मैंने जमीन को फ़र्श नहीं बनाया और पहाड़ों को खूण्टे नहीं बनाया।'

(अन नबा : 6-7)

लफ़्ज़ **'अव्ताद'** के मा'नी होते हैं, खूण्टे या कीलें (जैसे कि टेण्ट को बाँधने के लिये खूण्टे या कीलें इस्तेमाल की जाती हैं); मानो कि वो जियोलॉजिकल फ़ोल्ड्स (ज़मीन की तहों) की गहरी बुनियादें (फ़ाउण्डेशन्स) है।

'अर्थ (Earth)' नामी किताब को बेसिक रेफ़रेंस टेक्स्ट बुक के तौर पर पूरी दुनिया की तमाम यूनिवर्सिटीज़ में जियोलॉजी पढ़ाने के लिये मक़्बूलियत हासिल है। इस किताब के लेखकों में से एक हैं, फ़्रेंक प्रैस जो अमेरिका की एकेडमी ऑफ़ साइंसेज़ के 12 साल तक अध्यक्ष बने रहे और वे पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिम्मी कार्टर के विज्ञान

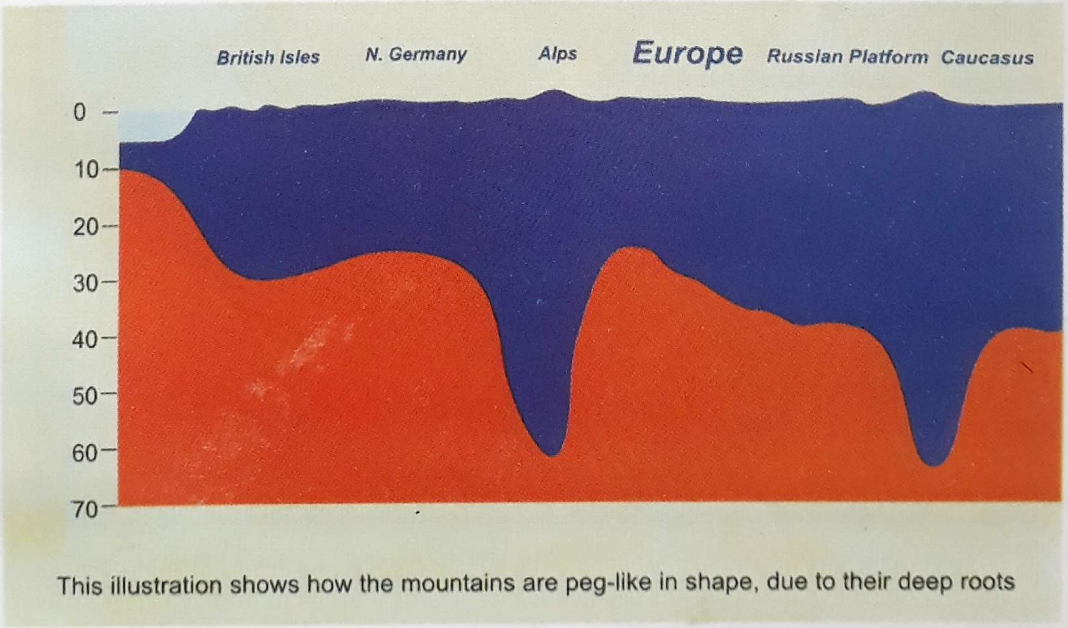

This illustration shows how the mountains are peg-like in shape, due to their deep roots

Scanned by CamScanner

सलाहकार भी रह चुके हैं।

उनकी इस किताब के चित्र बतलाते हैं कि पहाड़, गहरी जड़ों की वजह से किस तरह खूण्टों और कीलों की शक्ल धारण किये हुए हैं।

इस किताब के चित्र बतलाते हैं कि पहाड़ का रूप वैजनुमा (Wedge Shape) है और जो पहाड़ नज़र आते हैं वो तो ज़मीन के अन्दर–बाहर पूरे मुकम्मल पहाड़ का एक छोटा सा हिस्सा हैं, जिनकी जड़े ज़मीन की गहराइयों में मज़बूती से गड़ी हैं। डॉ. प्रैस के अनुसार ज़मीन की ऊपरी सतह को इस्तहक़ाम (सुदृढ़ता) बख़्शने में पहाड़ एक अहम रोल अदा करते हैं। क़ुर्आन स़ाफ़ तौर पर बतलाता है कि पहाड़ किस तरह ज़मीन को हिलने से बचाते हैं,

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ

'और मैंने ज़मीन पर पहाड़ों को मज़बूती से ठहरा दिया ताकि वह मख़्लूक़ (सृष्टि) को हिला न सके।' (अल अंबिया : 31)

क़ुर्आन की यह आयत मॉडर्न जियोलॉजिकल डाटा से पूरी त़रह मुताबिक़त (समरूपता) रखती है।

Scanned by CamScanner

पहाड़ मज़बूती से जमे हुए हैं

ज़मीन की सतह कई कठोर प्लेटों में बंटी हुई हैं, जिनकी मोटाई 100 किलोमीटर तक होती है। कुछ हद तक ये प्लेट्स पिघले हुए धातु वाले हिस्से पर तैर रही है, पिघली हुई धातु के इस भाग को **'एस्थिनोस्फ़ियर'** कहते हैं।

पहाड़ों की बनावट इन्हीं प्लेट्स (परतों) के किनारों पर क़ायम है। ज़मीन की ऊपरी सतह समन्दरों के नीचे 5 किलोमीटर तक मोटी है, और समतल ज़मीन से तक़रीबन 35 किलोमीटर मोटी है जबकि पहाड़ी इलाक़ों के नीचे उसकी मोटाई तक़रीबन 80 किलोमीटर तक गहरी है। यही वो मज़बूत बुनियादें हैं, जिन पर पहाड़ खड़े हैं। पहाड़ों की इन मज़बूत बुनियादों के बारे में भी क़ुर्आन में ज़िक्र मौजूद है,

وَالْجِبَالَ أَرْسَىٰهَا ﴿٣٢﴾

'और पहाड़ों को उसने मज़बूती से ठहरा दिया।' (सूरह नाज़ियात : 32)

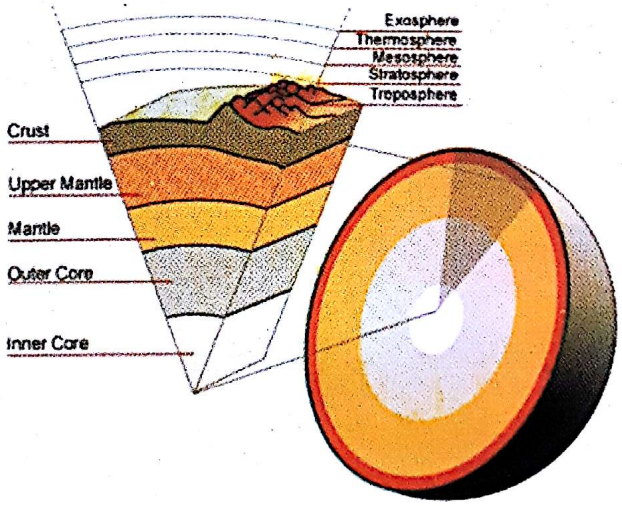

Scanned by CamScanner

Oceanography

समुद्र विज्ञान

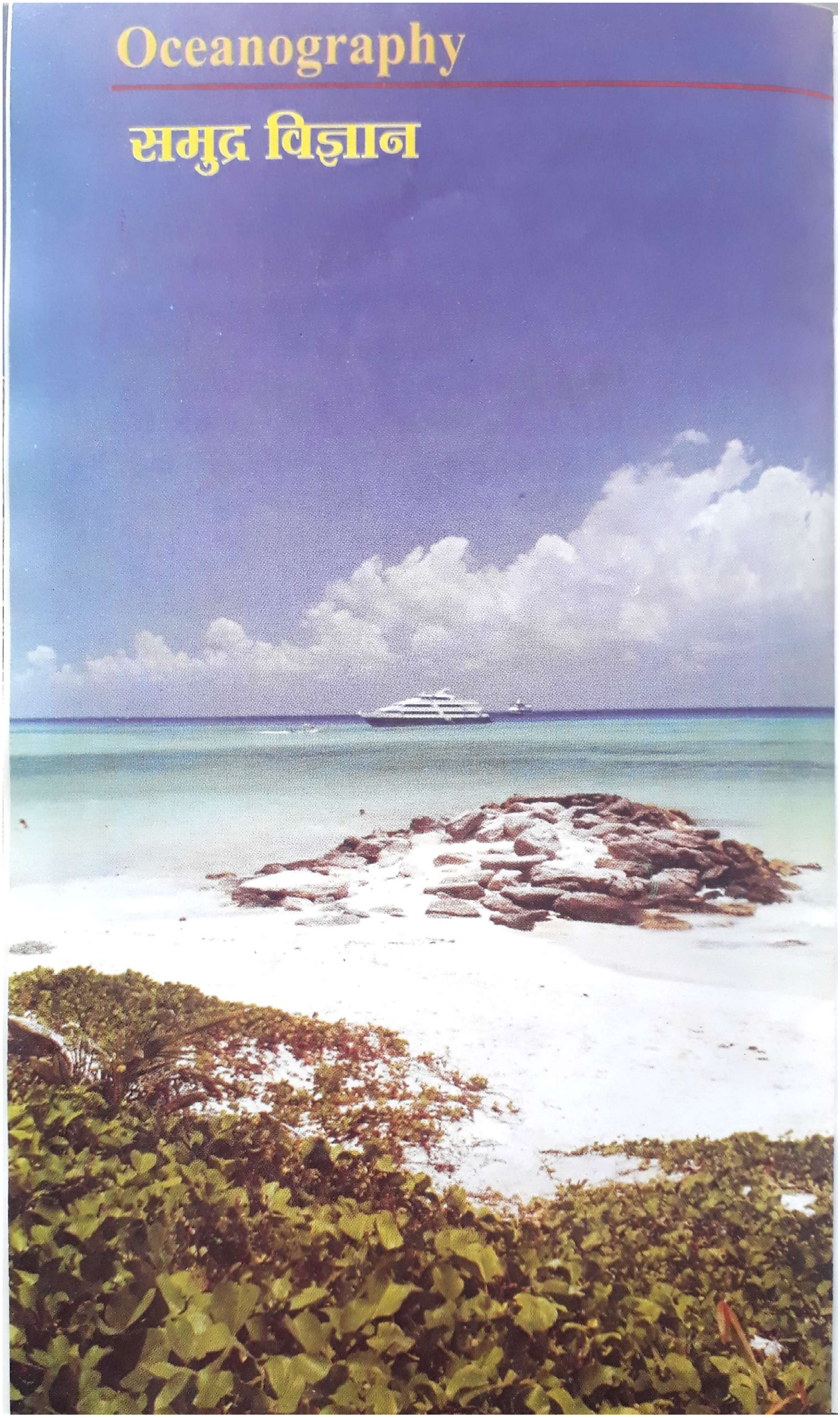

Scanned by CamScanner

मीठे और खारे पानी के बीच में आड़

नीचे लिखी क़ुर्आनी आयत का मुलाहिज़ा फ़र्माएं (अवलोकन करें),

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

'उसने दो समन्दरों को जारी कर दिया जो एक दूसरे से मिल जाते हैं। उनके दर्मियान एक आड़ है जिससे मुक़र्रर हद को वो पार नहीं कर सकते।' (अर् रह्मान : 19-20)

अ़रबी लफ़्ज़ **'बर्ज़ख़'** के मा'नी है, एक आड़ या पार्टीशन। यह आड़ अपना कोई भौतिक अस्तित्व यानी कि हक़ीक़ी पार्टीशन नहीं रखती। अ़रबी लफ़्ज़ **'म-र-जा'** के लुग़वी मा'ना (शाब्दिक अर्थ) है कि **'वे दोनों आपस में मिलते हैं और एक–दूसरे में ख़लत–मलत होते हैं।'** क़ुर्आन के शुरूआती दौर में तफ़्सीर निगार (व्याख्याकार), इसे समझा नहीं पाए कि दोनों त़रह़ के पानी आपस में मिलते भी हैं और अलग–अलग भी रहते हैं यानी आपस में मिक्स (खलत–मलत) होते हैं, और साथ ही उनके दर्मियान एक आड़ हाइल है। मॉडर्न साइंस ने खोज की कि उन जगहों पर जहाँ दो मुख़्तलिफ़ समन्दर मिलते हैं, वहाँ उनके दर्मियान एक आड़ होती है। अर्थात् दो परस्पर विरोधी दशाएं एक ही वक़्त में कैसे घटित हो सकती हैं कि जहाँ दो समन्दर परस्पर मिलते हैं वहाँ दोनों के बीच एक पर्दा होता है कि दोनों त़रह़ के पानी एक–दूसरे से मिलने के बावजूद अलग–अलग रहते हैं। यह आड़, दो समन्दरों को इस तौर पर बाँटती है कि हर समन्दर अपना ज़ाती तापमान (टेम्प्रेचर), खारापन और गाढ़ापन (Density) बरक़रार रख सके। समन्दरी वैज्ञानिक अब इस आयत को समझाने की बेहतर पोज़ीशन में हैं। वे अब इस आयत की बेहतर व्याख्या कर सकते हैं।

इस त़रह एक न दिखाई देने वाला तिरछा पार्टीशन (आड़) दो समन्दरों के बीच में मौजूद है, जिस में से गुज़रकर पानी एक समन्दर से दूसरे समन्दर में दाख़िल होता है।

लेकिन जब पानी एक समन्दर में से दूसरे समन्दर में दाख़िल होता है तो वो अपनी नुमाया ख़ुसूसियात खो बैठता है और दूसरे समन्दर के पानी से ख़लत–मलत होकर उससे प्रभावित हो जाता है। लिहाज़ा यह आड़ दो दरियाओं के मिलने और खलत–मलत होने का ज़रिया है।

Scanned by CamScanner

इस साइंटिफ़िक प्राकृतिक चमत्कार का ज़िक्र कुर्आन में मौजूद है, जिसे **'डॉ. विलियम हे'** ने तस्लीम किया, जो एक जाने–माने समुन्द्री वैज्ञानिक और अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ़ कॉलोराडो में जियोलॉजिकल साइंसेज के प्रोफ़ेसर रहे हैं।

कुर्आन इस प्राकृतिक चमत्कार के बारे में भी नीचे लिखी आयत में ज़िक्र करता है,

'और बनाई उनके दर्मियान एक आड़ (रोक को), जो दोनों समन्दरों को जुदा रखती है।' (अन् नम्ल : 61)

यह प्राकृतिक घटना कई जगहों पर जहाँ दो समन्दर मिलते हैं, घटित होती है। जैसा कि जिब्राल्टर नामी जगह पर जहाँ अटलाण्टिक महासागर और भू–मध्य सागर एक–दूसरे से मिलते हैं।

लेकिन जब कुर्आन ज़िक्र करता है, उस डिवाइडर के बारे में जो मीठे पानी और खारे पानी के दर्मियान हाइल होता है, तब वो एक बैरियर (आड़) के साथ एक रोधक अदृश्य पार्टीशन की मौजूदगी का ज़िक्र करता है,

'वो उसकी ज़ात है जिसने बहते हुए पानी के दोनों अंगों को छोड़ रखा; एक खाने–पीने के लायक़ मीठा पानी और दूसरा नमकीन व खारा; लेकिन फिर भी बनाया उसने एक आड़ उनके दर्मियान में, एक ऐसा पार्टीशन जिसको वो उबूर (पास) नहीं कर सकते।'

(अल फ़ुर्क़ान : 53)

Scanned by CamScanner

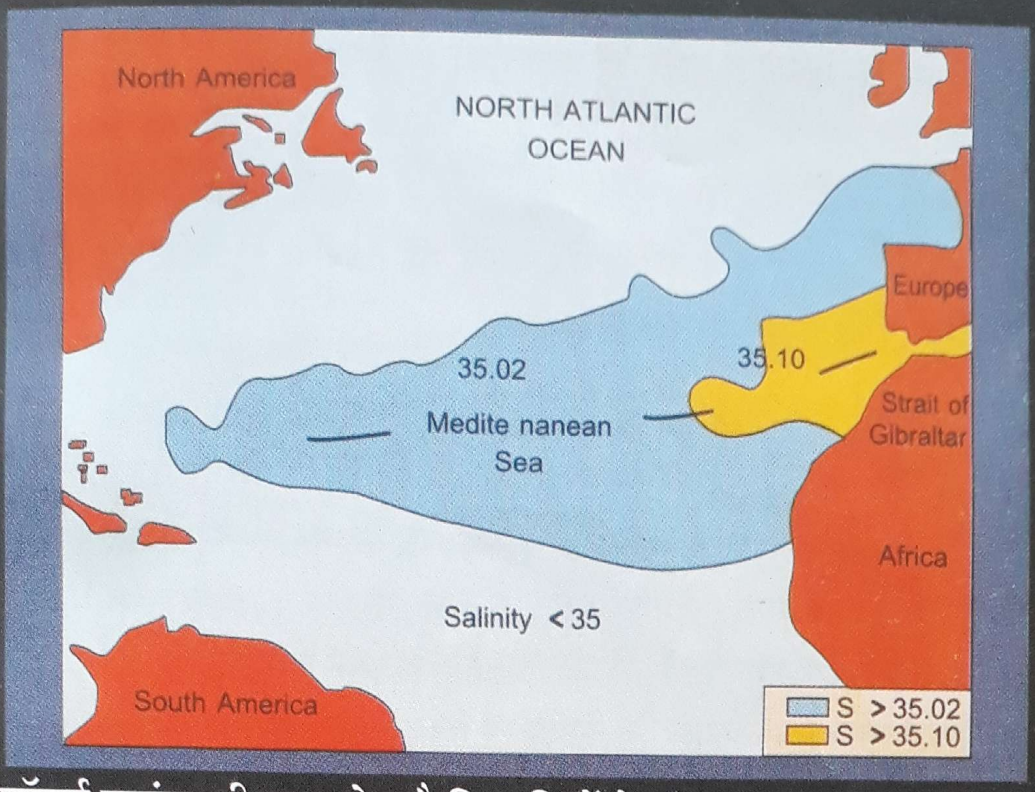

मॉडर्न साइंस की यह खोज है कि नदियों के मुँह की दशा जहाँ मीठे और खारे पानी आपस में मिलते हैं, बिल्कुल अलग होती है उन स्थानों की दशा से जहाँ दो समन्दर आपस में मिलते हैं। यह भी तजर्बा किया जा चुका है कि मीठे और खारे पानी में दहानों (मुँहों) पर विभेद पैदा करने वाली चीज़ क्या है? यह दरअसल दहानों में दो प्रकार के पानी के तयशुदा घनत्व हैं जो उन्हें परस्पर अलग रखते हैं। यह विभाजन मीठे और खारे पानी में नमक की कमी अथवा अधिकता की वजह से होता है। अर्थात् खारे पानी में नमक की मात्रा बहुत ज़्यादा होती है जबकि मीठे पानी में नाम–मात्र, नतीज़न उनका घनत्व जुदा (विभिन्न) होकर परतें अलग–अलग हो जाती हैं।[1] यह चमत्कार कई जगहों पर देखा जा सकता है। जैसे मिस्र जहाँ नील नदी का पानी रोम सागर से मिलता है।

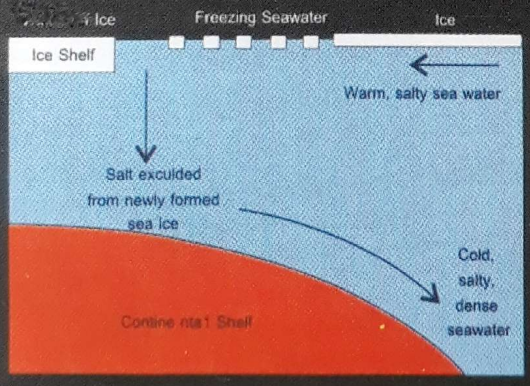

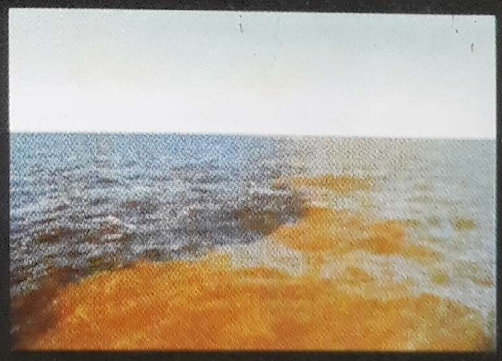

Ref. 1 : Oceanography, Gross, P. 242-244, Also see Introductory Oceanography, Thusman, P. 300-301

Scanned by CamScanner

समन्दर की गहराइयों में अंधेरा

मरीन जियोलॉजी (समुद्री भू–गर्भ विद्या) के एक्सपर्ट **प्रोफ़ेसर दुर्गा राव** जो जिद्दाह की किंग अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर भी रह चुके हैं, उनसे क़ुर्आन की हस्ब–ज़ैल आयत पर तब्सरा करने को कहा गया,

أَوْ كَظُلُمَٰتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَىٰهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ مَوْجٌ مِّن
فَوْقِهِۦ سَحَابٌ ظُلُمَٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهُۥ لَمْ
يَكَدْ يَرَىٰهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ ٱللَّهُ لَهُۥ نُورًا فَمَا لَهُۥ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾

'इन्कार करने वालों की हालत विशाल समन्दर की गहराइयों में घटाटोप अंधेरे जैसी है, तह–ब–तह अंधेरियों में और ज़्यादा अंधेरा, गोया उनके ऊपर घने काले बादल छाए हुए हों; अंधेरों की गहराइयाँ एक के ऊपर दूसरी; जिनमें एक शख़्स अगर अपने हाथ को बढ़ाए, तो वो उसे भी न देख सके। उसके लिये कोई रोशनी नहीं जिसको अल्लाह रोशनी न दे।' (सूरह नूर : 40)

तो प्रो. राव ने कहा है कि वैज्ञानिक हाल ही में आधुनिक यंत्रों (Modern Equipments) की मदद से प्रमाणित कर पाए हैं कि समन्दर की गहराइयों में अंधेरा है। गोताखोर इन्सान, यंत्रों की मदद के बिना समन्दर के पानी में 20 से 30 मीटर से ज़्यादा गहराई में नहीं जा सकते और समन्दर के 200 मीटर से ज़्यादा गहरे इलाक़ों में ज़िन्दा नहीं रह सकते। यह आयत सारे समन्दरों के बारे में नहीं क्योंकि हर समन्दर परत–दर–परत गहराई वाला नहीं है। यह आयत ख़ास़ तौर पर बहुत गहरे और विशाल समन्दर के बारे में है क्योंकि क़ुर्आन में **'विशाल और गहरे समन्दर में अंधेरा'** का ज़िक्र है।

यह परत–दर–परत अंधेरियाँ जो गहरे समन्दर में होती हैं, उसकी दो वजहें हैं,

(01). रोशनी की एक किरण सात रंगों से बनती है। वो सात रंग हैं, बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी व लाल (बै-नी-आ-ह-पी-ना-ला)।

Scanned by CamScanner

रोशनी की किरण जब पानी से टकराती है तो वो रिफ़्रेक्शन के मरहले से गुज़रती है। पानी की ऊपरी सतह 10 से 15 मीटर की गहराई तक लाल रंग को जज़्ब (अवशोषित) कर लेती है। लिहाज़ा अगर कोई गोताखोर 25 मीटर पानी की गहराई में है और वो अगर ज़ख़्मी हो जाए तो वो अपने ख़ून के लाल रंग को नहीं देख पाएगा, क्योंकि प्रकाश की लाल रंग वाली किरण उस गहराई तक नहीं पहुंच पाती। इसी तरह नारंगी रंग की किरणें 30 से 50 मीटर तक की गहराई में जज़्ब (अवशोषित) हो जाती है, पीले रंग की किरणें 50 से 100 मीटर, हरे रंग की किरणें 100 से 200 मीटर और आख़िर में आसमानी, नीला और बैंगनी रंग की किरणें 200 मीटर से ज़्यादा गहराई में जज़्ब हो जाती हैं। एक तह के बाद दूसरी तह पार करने पर चूँकि एक के बाद एक रंग अदृश्य (ग़ायब) होते चले जाते हैं, इसलिये समन्दर की गहराइयों में अंधेरियाँ बढ़ती चली जाती हैं। रोशनी की किरणें मंदी होती चली जाने के कारण समन्दर की 1000 मीटर की गहराई में मुकम्मल अंधेरा हो जाता है।

(02). बादल सूरज की रोशनी को सोखते हैं जिससे रोशनी में बिखराव पैदा होता है और बादलों के नीचे एक अंधेरी तह बन जाती है। यह पहली तह है अंधेरियों की। जब रोशनी की किरणें पहुँचती हैं समन्दर की सतह पर तब वो लहराते हुए पानी से प्रतिबिम्बित (रिफ़्लेक्ट) होकर वापस हो जाती है, जिसकी वजह से समन्दरी सतह चमकदार नज़र आती है। लिहाज़ा वो लहरें होती हैं जो रोशनी को प्रतिबिम्बित करती हैं और नीचे अंधेरों का कारण बनती हैं।

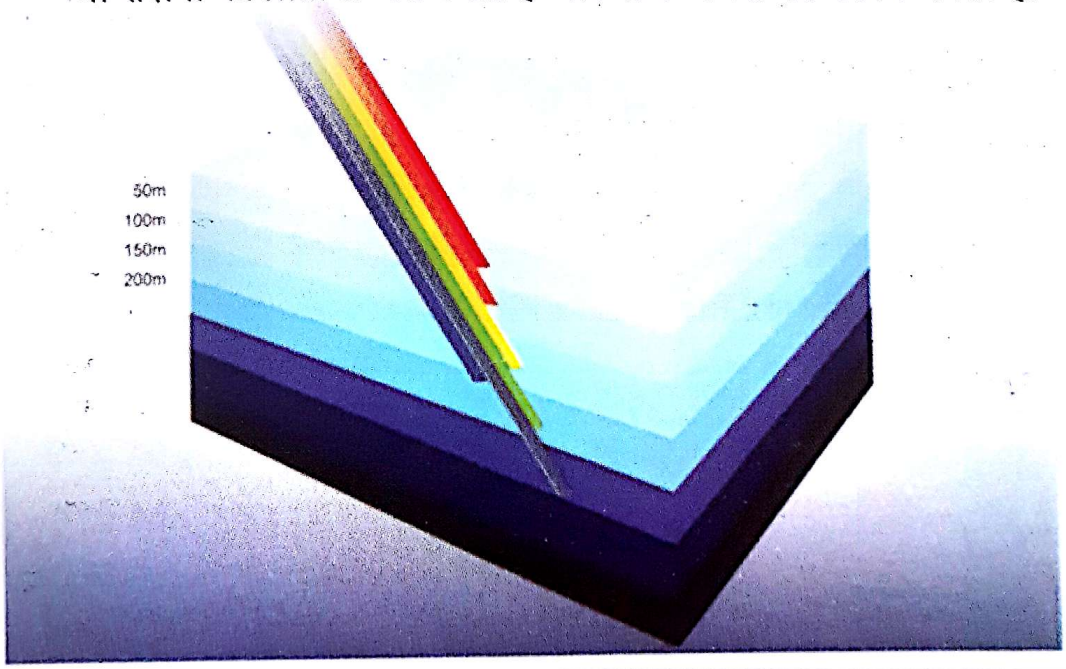

Scanned by CamScanner

बची–खुची रोशनी जो रिफ़्लेक्ट नहीं हुई, वही दाख़िल होती है समन्दर की गहराइयों में। लिहाज़ा समन्दर दो हिस्सों में बंटा हुआ है।

एक उपरी सतह जो रोशनी और गर्माहट लिये हुए है और दूसरी सतह जो अंधेरों में डूबी हुई है।

समन्दरों और महासागरों की गहराइयों में नीचे का पानी अपने ऊपर के पानी से ज़्यादा गाढ़ा होने के कारण आन्तरिक लहरों से होता है और अन्धेरा अन्दरूनी लहरों के नीचे से शुरू होता है। यहाँ तक कि महासागर की गहराइयों में मछलियां भी कुछ नहीं देख पातीं, रोशनी का एकमात्र ज़रिया उनके अपने ज़ाती जिस्मों (अंगों) से ख़ारिज होने वाली रोशनी है। क़ुर्आन में इसे बहुत ही ख़ूबसूरती के साथ बयान किया गया है,

'विशाल गहरे समन्दर की अंधेरियां, जो ग़ालिब हैं लहरों पर मज़ीद लहरों से।'

दूसरे अल्फ़ाज़ में यूं कहा जा सकता है कि इन लहरों के ऊपर भी कई तरह की लहरें हैं, और उसमें एक तरह़ की वो लहर भी होती है जो समन्दर की ऊपरी सतह पर देखी जाती है। क़ुर्आन की आयत आगे बयान करती है,

'जिनके ऊपर गहरे बादल छाए हुए होते हैं, अंधेरियों की गहराइयाँ, एक पर दूसरी तह–ब–तह।'

यह बादल जैसे कि समझाया जा चुका है कि आड़ (पार्टीशन) हैं एक के ऊपर दूसरा, जिसकी वजह से अलग–अलग सतहों पर अंधेरे में इज़ाफ़ा होता चला जाता है। यह रोशनी के विभिन्न रंगों के विभिन्न सतहों पर जज़्ब होते जाने के कारण होता है।

प्रो. दुर्गा राव ने अपनी बात का निष्कर्ष (निचोड़) यूँ कहते हुए बयान किया, '1400 साल पहले एक आम आदमी, इस प्राकृतिक घटना को इतने विस्तार से नहीं समझा सकता था। लिहाज़ा यह बात माननी होगी कि ऐसी जानकारी किसी ग़ैर–मामूली ताक़त (असाधारण शक्ति Super Natural Source) की तरफ़ से आई होगी।'

Scanned by CamScanner

Biology

जीव विज्ञान

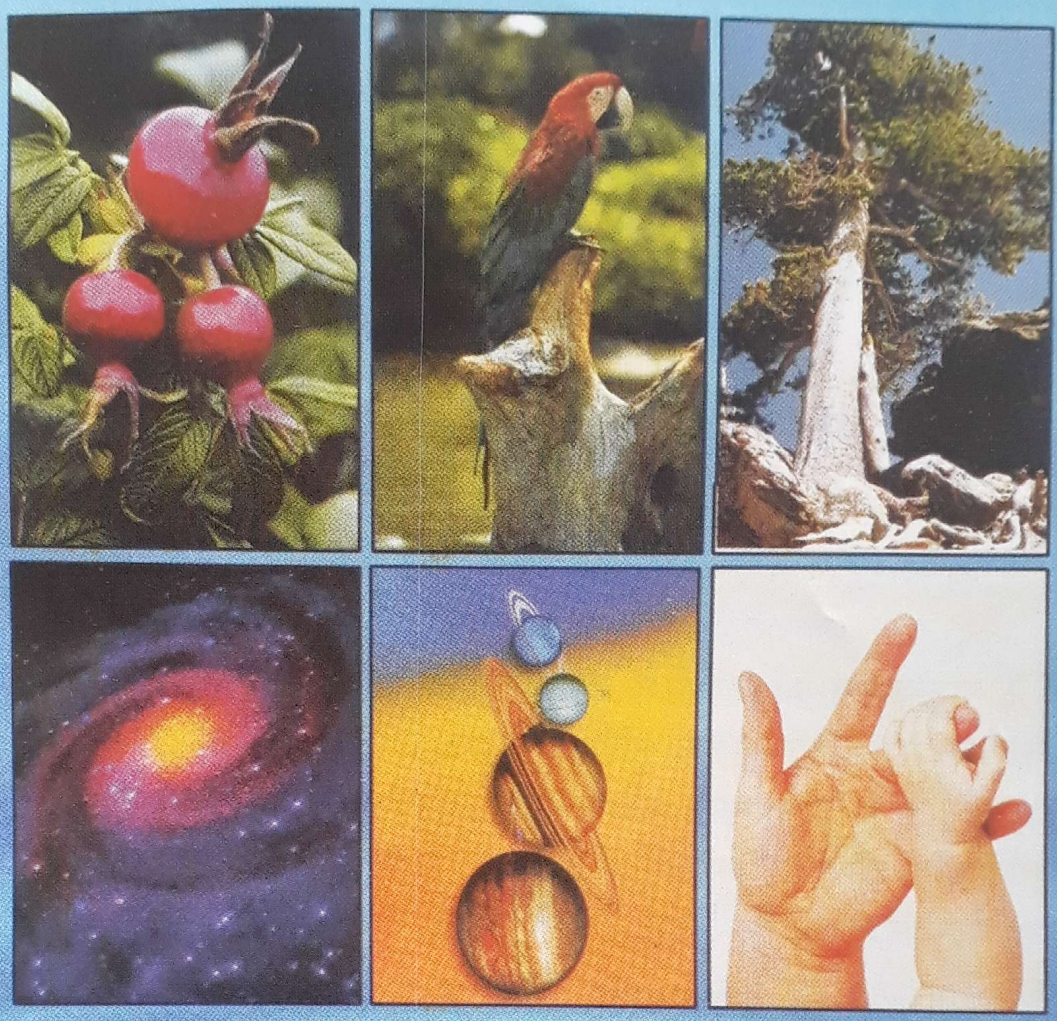

Scanned by CamScanner

हर जानदार पानी से बना है

नीचे लिखी कुर्आनी आयत मुलाहिज़ा फ़र्माएं,

أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا
فَفَتَقْنَٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

'क्या इन्कार करने वालों ने यह नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन आपस में मिले हुए थे फिर मैंने उन्हें अलग–अलग किया। हर जानदार शय को पानी से पैदा किया। क्या ये लोग फिर भी यक़ीन नहीं करते?'

(अल अंबिया : 30)

साइंस में तरक़्क़ी हो जाने के बाद ही हमें पता चल सका है कि साइटोप्लाज़्म, जो कि सैल (जीव कोशिका) का बुनियादी माद्दा होता है, उसका 80% हिस्सा पानी से बना हुआ होता है। जदीद खोज के बाद यह भी पता चला है कि अक्सर और बेशतर जिस्मानी अँगों की तख़्लीक़ (शारीरिक संरचना) में 50% से 90% तक पानी होता है और हर जानदार शय को ज़िन्दा रहने के लिये पानी की ज़रूरत होती है।

सोचिये!! 14 सौ साल पहले, किसी शख़्स के लिये क्या यह मुमकिन था कि वो इस बात का अन्दाज़ा लगा सके कि हर जानदार पानी से बना हुआ है? और वह भी अरब के रेगिस्तानों में रहने वाले किसी शख़्स के बारे में ऐसा सोचा जा सकता है कि उसने इस हक़ीक़त को भाँप लिया था, ऐसी जगह जहाँ हमेशा पानी की किल्लत रही हो?

नीचे लिखी आयत इस बात को बयान करती है कि हर जानदार को पानी से पैदा किया गया है,

وَٱللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّن مَّآءٍ ۖ

'और अल्लाह ने पैदा किया हर जानदार को पानी से।' (सूरह नूर : 45)

Scanned by CamScanner

नीचे लिखी आयत यह बयान करती है कि इन्सान को पानी से पैदा किया गया,

وَهُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ مِنَ ٱلْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُۥ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

'वो अल्लाह ही की ज़ात है जिसने इन्सान को पानी से पैदा किया; फिर क़ायम की उसने ख़ानदानी रिश्तेदारियाँ और ससुराली रिश्तेदारियाँ; बेशक तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'

(अल फ़ुर्क़ान : 54)

Scanned by CamScanner

Botany वनस्पति विज्ञान

पौधों को बनाया जोड़ी में, मुज़क्कर और मोअन्नस (नर व मादा)

पुराने ज़माने में इन्सान को इस बात का इल्म नहीं था कि पौधों में भी नर व मादा का फ़र्क़ है। वनस्पति विज्ञान कहता है कि हर पौधे में नर व मादा दोनों लिंग होते हैं। वो पौधे भी जो यूनिसेक्सुअल (केवल नर या मादा) हैं, उनमें भी नर व मादा के गुण (एलिमेण्ट्स) पाए जाते हैं।

Scanned by CamScanner

وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخۡرَجۡنَا بِهِۦٓ أَزۡوَٰجٗا مِّن نَّبَاتٖ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

'और उसने आसमान से पानी बरसाया। फिर उससे मैंने पौधों की मुख़्तलिफ़ क़िस्म की जोड़ियाँ पैदा कीं, जिनमें से हर एक दूसरों से जुदा है।'

(सूरह ता–हा : 53)

फल पैदा किये जोड़ियों में, नर व मादा

وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ جَعَلَ فِيهَا زَوۡجَيۡنِ ٱثۡنَيۡنِ

'और उसने हर क़िस्म के फलों को दो–दो की जोड़ियों में बनाया।'

(अर् रअ़द : 3)

आ़ला क़िस्म के पौधों का आख़री प्रोडक्ट (उपज) फल होता है। फल से पहले फूल बनने का मरहला आता है, जिनमें नर व मादा लिंग होते हैं जिन्हें **'स्टैमेन्स और ओवियूल्स'** कहा जाता है। जब एक ख़ास त़रह़ के कण (पोलन) फूल तक पहुँचते हैं तो फल की रचना होती है जो पककर अपने बीज को जन्म देता है। इसलिये सारे फलों के बारे में यह कहा जा सकता है कि उनमें नर व मादा लिंग मौजूद होते हैं; इस ह़क़ीक़त का बयान बहुत पहले से कुर्आन में मौजूद है।

किन्हीं ख़ास क़िस्म के पौधों में ऐसे फूलों से फल आ सकते हैं जो कि फ़र्टीलाइज़्ड (उपजाऊ) नहीं होते। पैरेन्थोकार्पिक फल यानी पैतृक फल। मिसाल के तौर पर केले, अनन्नास की कुछ क़िस्में, अंजीर, संतरा, अंगूर की लता वग़ैरह। इनमें नर–मादा लिंग की ख़ुसूसियात वाज़ेह तौर पर पाई जाती है।

तमाम चीज़ें जोड़ियों में बनी हैं

وَمِن كُلِّ شَيۡءٍ خَلَقۡنَا زَوۡجَيۡنِ

'और मैंने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है।' (सूरह ज़ारियात : 49)

Scanned by CamScanner

यह आयत उन चीज़ों के बारे में भी बयान करती है जो इन्सान, जानवर, फल व पौधे के अ़लावा है। इसमें उस प्राकृतिक घटना की त़रफ़ भी निशानदेही हो सकती है जैसे बिजली जिसमें जो एटम (ज़र्रात/परमाणु) होते हैं वे इलेक्ट्रॉन व प्रोटोन या नेगेटिव व पोज़िटिव चार्ज धारण किये हुए होते हैं।

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ
وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

'पाक है वो अल्लाह जिसने सारी चीज़ों के जोड़े पैदा किये चाहे वह ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हो या ख़ुद उन्हीं की जिन्स से हो हैं और दूसरी वे तमाम चीज़ें भी जिनके बारे में उन्हें (इन्सानों को) कोई इल्म नहीं है।' (सूरह यासीन : 36)

क़ुर्आन यहाँ ज़िक्र करता है कि कायनात की हर चीज़ जोड़ियों में बनाई गई है, उनमें वे चीज़ें भी शामिल हैं जिन्हें आज के दौर के इन्सान नहीं जानते लेकिन आगे चलकर जान सकते हैं।

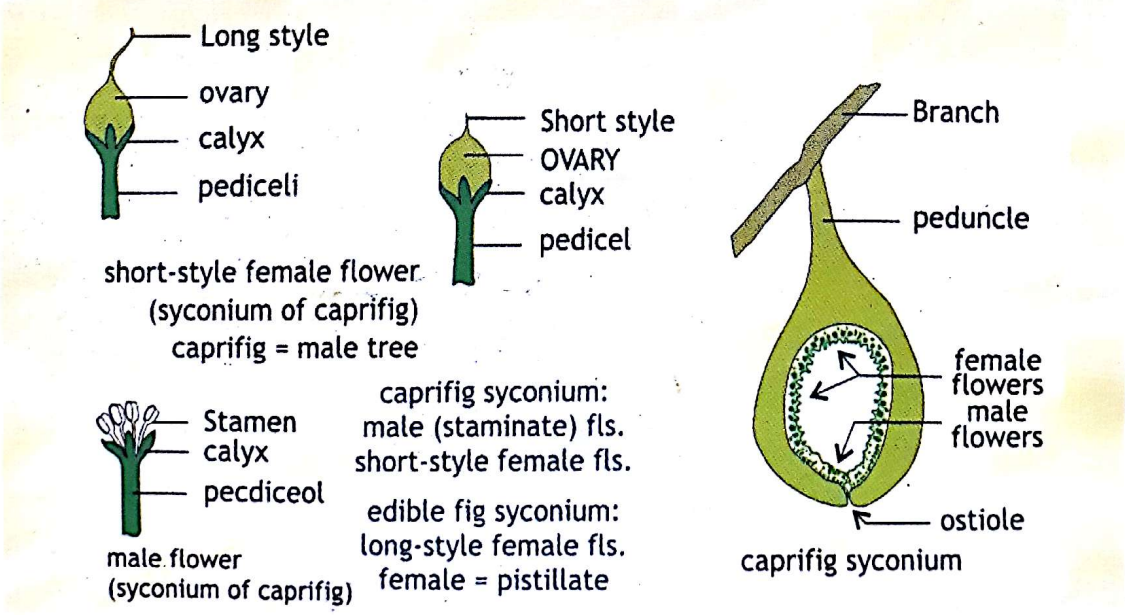

Scanned by CamScanner

Zoology

जन्तु विज्ञान

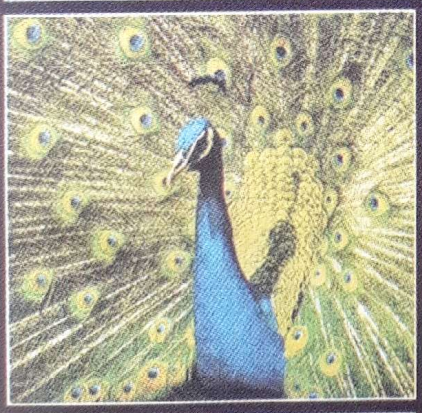

Scanned by CamScanner

जानवर और परिन्दे अपने–अपने समुदायों के साथ रहते हैं

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا طَٰٓئِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّآ أُمَمٌ أَمْثَالُكُم

'और जितने क़िस्म के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हों और जितने भी परिन्दे (जानदार) जो अपने परों पर उड़ते हों, वो सभी तुम्हारी तरह समुदायों में रहते हैं।' (अल अन्आम : 38)

वैज्ञानिक खोजों ने ष़ाबित कर दिया है कि जानवर और परिन्दे समुदाय बनाकर रहते हैं। यानी मिलकर सारे इन्तज़ाम करते हैं और काम करते हैं।

परिन्दों की उड़ान

أَلَمْ يَرَوْا۟ إِلَى ٱلطَّيْرِ مُسَخَّرَٰتٍ فِى جَوِّ ٱلسَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾

'क्या वो परिन्दों को नहीं देखते जो आसमान में सन्तुलन के साथ ठहर जाते हैं? उन्हें आसमान में अल्लाह के सिवा कोई थामे हुए नहीं है, बेशक इनमें ईमानवालों के लिये निशानियाँ हैं।' (अन् नम्ल : 79)

ऐसा ही एक सन्देश क़ुर्आन की नीचे लिखी आयत में भी ज़िक्र किया गया है,

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ إِلَى ٱلطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَٰٓفَّٰتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱلرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍۭ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

'क्या ये उन परिन्दों को नहीं देखते जो अपने परों को खोले हुए और कभी समेटे हुए उड़ते हैं? उन्हें सिवाय अल्लाह के कोई नहीं थाम

Scanned by CamScanner

सकता। बेशक हर चीज़ उसकी निगाह में है।' (अल मुल्क : 19)

अरबी लफ़्ज़ **'अम-स-क'** के लुग़वी मा'ने (शाब्दिक अर्थ) है, **किसी के ऊपर अपना हाथ रखना, पकड़ना या थामना या किसी को रोक लेना, जो इस तसव्वुर को ज़ाहिर करता है कि अल्लाह आकाश में उड़ते हुए परिन्दों को थामे हुए है, वह उन्हें अपनी ताक़त के आगोश में समा लेता है। इन आयात में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि परिन्दों का बर्ताव (आचरण) इलाही निज़ाम के साथ बहुत गहरा रब्त रखता है।** मॉडर्न साइण्टिफ़िक डाटा से ज़ाहिर हुआ है कि परिन्दों की कुछ ख़ास जातियों की नकलो–हरकत (गतिविधियों) की प्रोग्रामिंग (कार्यक्रम) निपुणता (सटीकता) की बेहतरीन मिसाल है। परिन्दों के जेनेटिक कोड में (ख़ानदानी असर के कारण) एक प्रवासी कार्यक्रम (माइग्रेटरी प्रोग्राम) की मौजूदगी, जो कि इस बात को समझा सकती है कि नई उम्र के बहुत छोटे परिन्दे किस तरह बग़ैर किसी पेशतर तजुर्बे (पूर्व अनुभव) के और बग़ैर किसी गाइड के लम्बे और पेचीदा सफ़र का भार उठाते हैं और उसे पूरा कर लेते हैं। वो एक निर्धारित समय पर ठीक उसी जगह वापस लौट सकते हैं, जहाँ से उनकी रवानगी हुई थी। यह माइग्रेटरी प्रोग्राम इस बात को साबित करता है कि उनके पैदाइशी कोड में ऐसी क़ुदरती प्रोग्रामिंग मौजूद है जिसके मुताबिक़ उनकी गतिविधियाँ हैरतअंगेज़ ढंग से प्रकाश में आती है।

प्रोफ़ेसर हैम्बर्गर अपनी किताब **'पॉवर एण्ड फ्रेगिलिटी'** में **'मटन बर्ड'** नामी परिन्दे की मिसाल बयान करते हैं, जो कि पैसिफ़िक में रहता है और वो 1500 मील से ज़्यादा सफ़र करता है। इन परिन्दों का झुण्ड **'8'** की शक्ल में क़रीब 6 महीने में अपना सफ़र पूरा करता है और तयशुदा वक़्त पर अपनी रवानगी की जगह पर वापस लौटता है, जिसमें ज़्यादा से ज़्यादा एक हफ़्ते की ताख़ीर (देरी) हो सकती है। ऐसे लम्बे सफ़र के लिये यह निहायत ही पेचीदा हिदायतें, परिन्दे के आसाबी निज़ाम के अन्दर समाई हुई रहती है। उन्हें बिला–शुब्हा इस काम के लिये क़ुदरती तौर पर प्रोग्राम किया गया है। **लिहाज़ा क्या हमें नहीं पलटना चाहिये उस अज़ीम प्रोग्रामर को पहचानने की तरफ़, जिसने यह प्रोग्राम तय किया है?**

Scanned by CamScanner

मधुमक्खी

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى ٱلنَّحْلِ أَنِ ٱتَّخِذِى مِنَ ٱلْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ ٱلشَّجَرِ
وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٨﴾ ثُمَّ كُلِى مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ فَٱسْلُكِى سُبُلَ رَبِّكِ
ذُلُلًا

'और तुम्हारे परवरदिगार ने सिखाया मधुमक्खी को छत्ते बनाना, पहाड़ियों में, दरख़्तों पर और लोगों के घरों में। फिर वो सब चीज़ें सिखाई जो ज़मीन से पैदा होती है और चलना सिखाया उन राहों की तरफ़ जिन्हें उसने बतलाया और आसान किया।'

(अन् नह्ल : 68-69)

सन् 1973 में **वॉन फ्रिश** ने नोबल पुरस्कार हासिल किया। यह पुरस्कार उन्हें मधुमक्खियों के बर्ताव और कम्युनिकेशन (सूचना के आदान–प्रदान) की खोज के लिये दिया गया था। मधुमक्खी को जब कोई नए बगीचे या फूल का पता चलता है तो वो अपनी जातिवालों के पास लौटती है और उनको उसका सही ठिकाना और नक्शा बतलाती है, जिसे **'बी–डॉंस'** के नाम से जाना जाता है। मधुमक्खियों की इस नकलो–हरकत का मक़्सद उनके और मेहनतकश मधुमक्खियों के बीच जानकारियों का आदान–प्रदान होता है। यह जानकारी साइंस की खोज के ज़रिये हासिल हुई है। इस खोज के लिये फोटोग्राफ़ी और दूसरी वैज्ञानिक विधियों का इस्तेमाल किया गया। कुर्आन की उपरोक्त आयत में यह ज़िक्र किया गया है कि मधुमक्खी किस तरह महारत के साथ, अपने परवरदिगार की वसीअ राहों को ढूंढ़ती है।

मेहनतकश मधुमक्खी या सिपाही मधुमक्खी मादा होती है। सूरह अन् नह्ल की आयत नं. 68-69 में मधुमक्खी के लिये मादा लिंग (**'फस्लुकी'** और **'कुली'**) का इस्तेमाल किया गया है। जो यह इशारा देता है कि जो मधुमक्खी अपनी ख़ुराक़ जमा करने की ख़ातिर घर छोड़ती है, वो मादा होती है। दूसरे अल्फ़ाज़ में हम यह कह सकते हैं कि **'सिपाही'** या **'मेहनतकश'** मधुमक्खी एक मादा होती है।

बहरहाल शेक्यपियर के एक नाटक **'हेनरी द फॉर्थ'** के कुछ पात्र मधुमक्खियों के बारे में बोलते हैं और ये बतलाते हैं कि मधुमक्खियाँ सिपाही होती हैं

Scanned by CamScanner

और उनका एक बादशाह होता है। लोगों की यह सोच थी, शेक्सपियर के ज़माने में। वो यूँ समझते थे कि मेहनतकश मधुमक्खियाँ नर होती हैं और जब वे घर लौटते हैं जो अपने बादशाह मधुमक्खी को जवाबदेह होते हैं। मगर यह बात सही नहीं। मेहनतकश मधुमक्खियाँ मादा ही होती हैं और वो बादशाह मधुमक्खी को नहीं बल्कि **'रानी मधुमक्खी'** को जवाबदेह होती हैं। लेकिन यह ख़ुलासा भी जदीद तहक़ीक़ात (आधुनिक खोजों) के ज़रिये पिछले 300 सालों में हो पाया है।

Scanned by CamScanner

मकड़ी का जाला/घर बहुत कमज़ोर होता है

क़ुर्आन की सूरह अन्कबूत में यूँ ज़िक्र किया गया है,

مَثَلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ
ٱلْعَنكَبُوتِ ٱتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ ٱلْبُيُوتِ
لَبَيْتُ ٱلْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

'जो अल्लाह को छोड़कर दूसरों को अपना मददगार बनाते हैं, उनकी मिसाल मकड़ी की त़रह है जो (अपने लिये) एक घर बनाती है लेकिन दरहक़ीक़त सारे घरों में सबसे कमज़ोरतरीन घर मकड़ी का होता है। लेकिन वो (लोग) ख़बर नहीं रखते।' (अल अन्कबूत : 41)

अल्लाह ने यहाँ मकड़ी के जाले की भौतिक कमज़ोरी बतलाते हुए फ़र्माया कि वो निहायत ही कमज़ोर, नाज़ुक और आरज़ी (अस्थाई) होता है। साथ ही साथ क़ुर्आन इस बात पर भी ज़ोर देता है कि मकड़ी के रिश्ते–नाते भी कमज़ोर होते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि मादा मकड़ी अपने संगी (पति) यानी नर मकड़ी को मार देती है।

Scanned by CamScanner

चींटियों का रहन–रहन और संचार व्यवस्था

कुर्आन की नीचे लिखी आयत मुलाहिज़ा फ़र्माएं,

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَٰنَ جُنُودُهُۥ مِنَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ وَٱلطَّيْرِ فَهُمْ
يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَتَوْا۟ عَلَىٰ وَادِ ٱلنَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَٰٓأَيُّهَا
ٱلنَّمْلُ ٱدْخُلُوا۟ مَسَٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَٰنُ وَجُنُودُهُۥ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

'और सुलेमान के सामने उनके तमाम लश्कर जिन्नात, इन्सान और परिन्दे क़तारों में हाज़िर किये गये और परिन्दों की और उन्हें तर्तीबवार व दर्जे के मुताबिक़ खड़ा किया गया। यहाँ तक कि वो पहुँचे चींटियों की वादी पर। तब एक चींटी ने आवाज़ लगाई, 'ऐ चींटियों! दाख़िल हो जाओ अपने–अपनें घरों में, वर्ना सुलैमान और उसका लश्कर तुमको (अपने पैरों तले) कुचल न दे और उन्हें ख़बर भी न हो।'

(अन्नम्ल : 17-18)

हो सकता है कि अतीत में कुछ लोगों ने कुर्आन की यह कहकर हँसी उड़ाई हो कि यह कुर्आन तो बनावटी क़िस्से–कहानियों की किताब मालूम होती है, जिसमें

Scanned by CamScanner

चींटियों को आपस में बातचीत करते हुए बतलाया गया है और यह भी कहा गया है कि वो हस्सास (संवेदनशील) क़िस्म के संदेशों का आदान–प्रदान भी करती हैं।

लेकिन हालिया ज़माने में रिसर्च ने चींटियों की ज़िन्दगी के बारे में ऐसी बेशुमार सच्चाइयाँ बताई हैं; जिनका इन्सान को अब से पहले पता नहीं था। रिसर्च ने बतलाया है कि जानवरों और कीड़े–मकोड़ों में चींटियों का रहन–सहन इन्सानों की ज़िन्दगी से क़रीबी मुशाबिहत (समरूपता) रखता है। चींटियों के बारे में हस्ब–ज़ैल मालूमात से इस बात का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि :–

(1). चींटियाँ इन्सानों की तरह अपने मुर्दों को दफ़नाती हैं।

(2). उनमें मिल–जुलकर काम करने का और आपस में काम के बंटवारे का एक निहायत ही हस्सास निज़ाम (संवेदनशील व्यवस्था) मौजूद है, जिसके चलते उनमें मैनेजर, फोरमैन, मज़दूर वग़ैरह होते हैं।

(3). कभी–कभार वे आपस में बातचीत (मीटिंग) के लिये जमा होती हैं।

Scanned by CamScanner

(4). उनमें आपसी मेल–मिलाप (बातचीत) का एक उम्दा तरीक़ा मौजूद है।

(5). वो पाबन्दी से बाज़ार लगाती हैं जिनमें वे सामान का आदान–प्रदान (एक्सचेंज) करती हैं।

(6). सर्दियों के मौसम में वे लम्बे अर्से के लिये अनाज़ वग़ैरह का ज़खीरा जमा करती हैं अगर उस अनाज में अंकुर फूटने लगते हैं तो वे उन्हें जड़ से काट देती हैं, गोया उनमें यह समझ मौजूद होती है कि अगर उन्हें इसी हाल में उगने या बढ़ने दिया गया तो वो अनाज सड़ जाएगा वो अनाज जिसका उन्होंने ज़खीरा किया अगर बरसात के कारण भीग जाता है तो वे उस अनाज को धूप में सुखाने के लिये अपने बिलों से बाहर लाती हैं। जब वो अनाज सूख जाता है तो वे उसे फिर से अन्दर ले जाती हैं। गोया उनके अन्दर यह समझ मौजूद होती है कि नमी के कारण अनाज में अंकुर फूटते हैं और फिर वो अनाज सड़ जाता है।

Scanned by CamScanner

शहद में घाव भरने की क्षमता है

मधुमक्खी कई तरह के फलों–फूलों का रस सोखती (चूसती) है जिससे उनके जिस्म में शहद बनता है, जिसे वो जमा करती हैं मोम के सुराखों में यानी शहद के छत्ते में। यह हक़ीक़त कुछ सदियों पहले ही इन्सान को पता चली कि शहद मधुमक्खी के पेट से आता है। जबकि कुर्आन ने यह हक़ीक़त 1400 से अधिक साल पहले बतला दी थी। प़बूत के तौर पर नीचे लिखी आयत पर नज़र डालें,

يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ

'उनके पेटों से निकलता है मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंगों का एक शर्बत (शहद), जिसमें ज़ख़्म भरने की तासीर और शिफ़ा (इलाज) है, इन्सानों के लिये।' (अन्नह्ल : 69)

अब हमारी जानकारी में यह बात आ चुकी है कि शहद में ज़ख़्म भरने की ख़ासियत मौजूद होती है। **यह एक सौम्य (माइल्ड) एण्टी–सेप्टिक है,** यानी इसमें जख़्म के पकाव और सड़न को रोकने की क्षमता मौजूद है। दूसरे विश्वयुद्ध में रूसियों ने ज़ख़्मों के इलाज के लिये शहद का इस्तेमाल किया। शहद से ज़ख़्म में नमी बरक़रार रहती है और ज़ख़्म का निशान हल्केपन को छोड़कर बाक़ी नहीं रहता। शहद के गाढ़ेपन के कारण ज़ख़्म में कीटाणु और सड़न पैदा नहीं होती।

किसी इन्सान को अगर किसी ख़ास क़िस्म के पौधे से एलर्जी हो तो उसे उस पौधे से हासिल किया हुआ शहद दिया जाना चाहिये ताकि उस शख़्स में उस एलर्जी को रोकने की क्षमता पैदा हो जाए। शहद **'फ्रुक्टोज़ (ताक़त देने वाली चीज़)'** और 'विटामिन के' से भरपूर होता है। लिहाज़ा यह साबित हुआ कि कुर्आन ने बहुत अर्से पहले ही शहद के बनने और उसकी ख़ासियतें ऐसे दौर में बतला दीं, जबकि इन्सान शहद की इन ख़ूबियों के बारे में कोई ख़ास जानकारी नहीं रखता था।

Scanned by CamScanner

ख़ून का दौरा (ब्लड सर्कुलेशन) और दूध का बनना

जो बात कुर्आन के आसमान से नाज़िल होने के 600 बरस बाद मुस्लिम साइंसदाँ **इब्ने नफ़ीस** ने पूरी तफ़्सील के साथ और **विलियम हार्वे** ने आज से 1000 साल पहले ख़ून के दौर (ब्लड सर्कुलेशन) कर बिल्कुल नया इल्म पश्चिमी दुनिया को पहुंचाया था, वो बात क़ुर्आन में पहले ही नाज़िल की जा चुकी थी।

तक़रीबन 1300 साल पहले यह पता चला कि आँतों में कौनसी क्रिया होती है जिससे हाज़मे की क्रिया को मज़बूती मिलती है ताकि जिस्म के अंगों को गिज़ा (खाना/आहार) पहुँच सके। क़ुर्आन ने इस बात को समझाया कि दूध के अज़ा (अवयवों) का स्रोत क्या है और यह बात ऊपर बताई गई जानकारियों से समानता रखती है।

उपरोक्त नज़रिये (अवधारणा /कन्सेप्ट) को समझने के लिये यह जानना ज़रूरी है कि आँतों में रासायनिक प्रक्रियाएं (केमिकल रिएक्शन) होती हैं और यह कि जो मग़्ज़ या गूदा (सबस्टेंस) खाने (भोजन) से जज़्ब किया जाता है वो एक पेचीदा (कॉम्प्लेक्स) सिस्टम के ज़रिये ख़ून के बहाव (स्ट्रीम) में मुन्तक़िल (ट्रांसफर) हो जाता है। कभी–कभार यह क्रिया जिगर (लीवर) के ज़रिये भी होती है जो कि उनके रासायनिक गुण पर आधारित होती है। ख़ून उन्हें जिस्म के सभी अँगों तक पहुँचाता है, इन अँगों में दूध पैदा करनेवाले ममैरी ग्लाइण्ड्स (गुदूद) भी मौजूद होते हैं।

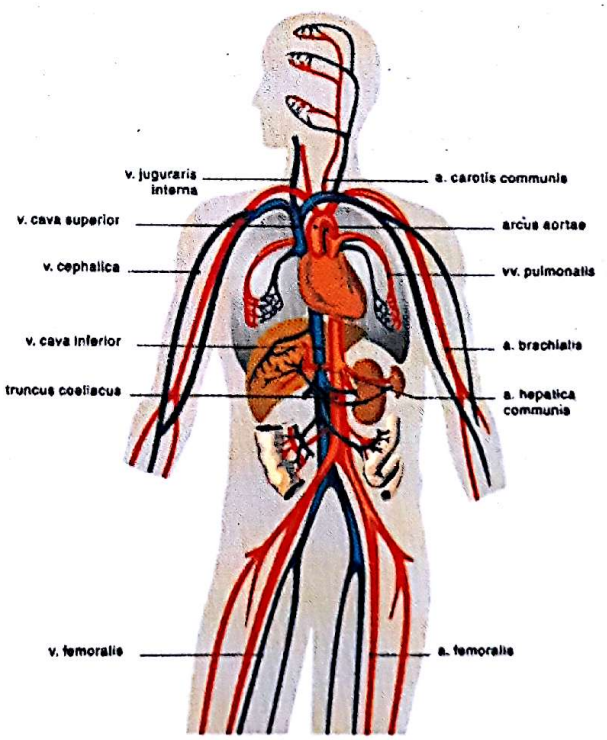

सादे अल्फ़ाज़ में हम यूँ भी कह सकते हैं कि आँतों में पड़े हुए मादा में से कुछ मग़्ज़ या गूदा आँतों की

Scanned by CamScanner

दीवारों के मुँहों से दाख़िल होता है फिर इस मग़ज़ या गूदा को ख़ून के बहाव (ब्लड स्ट्रीम) के ज़रिये जिस्म के मुख़्तलिफ़ अँगों तक पहुँचाया जाता है।

क़ुर्आन की नीचे लिखी आयत को हम अगर समझने की कोशिश करें तो हमें इस कन्सेप्ट की ख़ूबी का पूरी तरह अन्दाज़ा हो जाएगा,

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ
وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

'और तुम्हारे लिये चौपायों में भी इबरत की निशानी मौजूद हैं। मैं उनके पेट से गोबर और ख़ून के बीच से ख़ालिस दूध तुम्हें पिलाता हूँ जो कि पीनेवालों के लिये बहुत फ़ायदेमन्द होता है।' (अन् नह्ल : 66)

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا
مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

'और चौपायों में भी तुम्हारे लिये समझाइश करनेवाली मिसाल मौजूद है; उनके जिस्मों के अन्दर मैं तुम्हारे पीने के लिये दूध पैदा करता हूँ, उनमें तुम्हारे लिये बेशुमार दूसरे फ़ायदे हैं और उनका गोश्त जो तुम खाते हो।' (अल मोमिनून : 21)

जानवरों में दूध की पैदावार के बारे में क़ुर्आन ने जो ज़िक्र किया है वो हैरतअंगेज तौर पर उस जदीद खोज से मेल खाता है जो मॉडर्न फ़िजियोलॉजी ने अब पता लगाया है।

Scanned by CamScanner

Embryology

भ्रूण विज्ञान

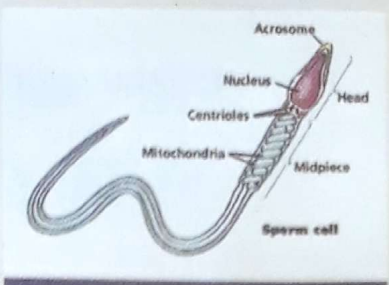

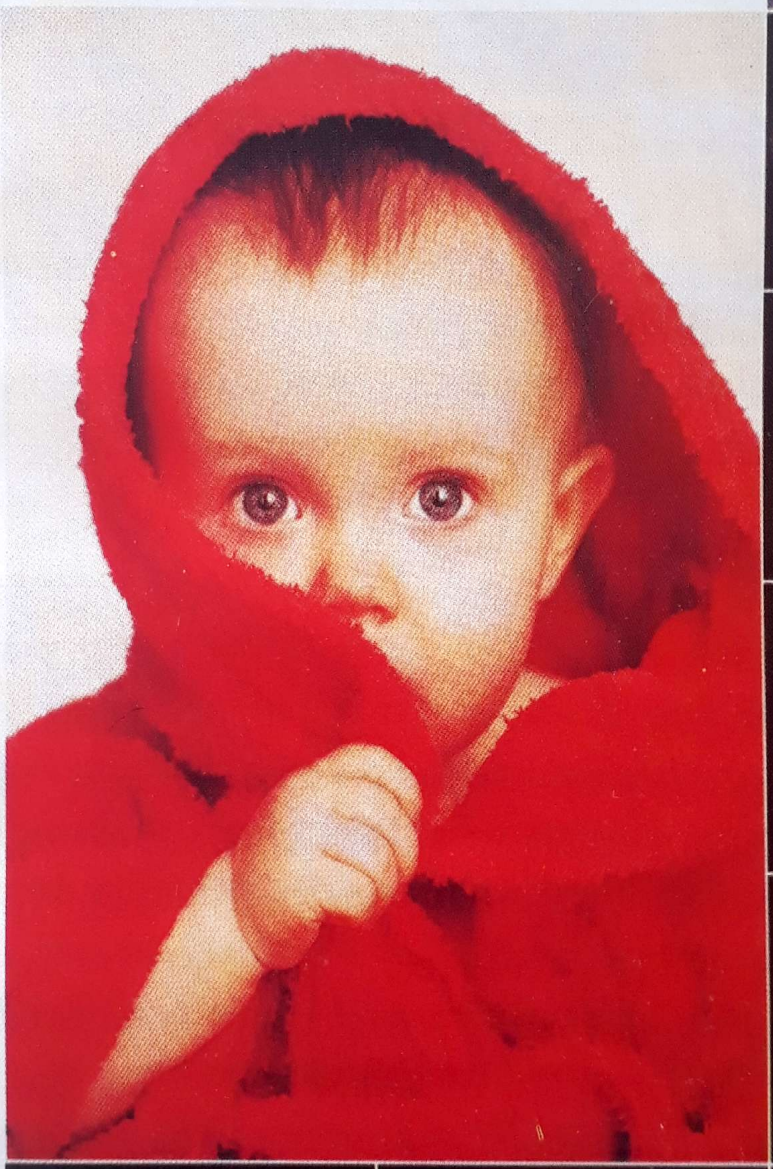

Scanned by CamScanner

इन्सान को पैदा किया गया है 'अलक' से, जो गूदा होता है लीच (जोंक) की तरह.

कुछ बरसों पहले अ़रबों के एक ग्रुप ने भ्रूण विज्ञान यानी एम्ब्रायोलॉजी के तअ़ल्लुक़ से सारी जानकारियाँ जमा की और क़ुर्आनी हिदायतों की पैरवी की,

فَسْـَٔلُوٓاْ أَهْلَ ٱلذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

'अगर तुम इसको समझ नहीं पा रहे हो तो पूछो उनसे जो इस बारे में जानकारी रखते हों।' (अन् नह्ल : 43, अल अ़ंबिया : 7)

क़ुर्आन से जमा की गई इन सारी जानकारियों का अंग्रेज़ी में तर्जुमा किया गया और उसको कनाडा की **यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरेण्टो** के एम्ब्रायोलॉजी (भ्रूण विज्ञान) के प्रोफ़ेसर और डिपार्टमेण्ट ऑफ़ एनाटॉमी के चैयरमैन **'डॉक्टर कीथ मूरै'** को पेश किया गया। **डॉ. मूरै**, भ्रूण विज्ञान के क्षैत्र में इस दौर की सबसे नुमाया शख़्सियत हैं।

उनसे कहा गया कि भ्रूण विज्ञान के तअ़ल्लुक़ से जो जानकारियाँ क़ुर्आन मजीद में मौजूद हैं, उस पर अपने विचार व्यक्त करें। क़ुर्आन मजीद की आयतों का तर्जुमा उनके सामने पेश किया गया। उसका बड़े ग़ौर से जाइ़ज़ा लेने के बाद **डॉ. मूरै** ने कहा कि इस जानकारी का ज़्यादातर हिस्सा एम्ब्रायोलॉजी से तअ़ल्लुक़ रखता है और जिसका ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में किया गया है वो भ्रूण विज्ञान के क्षैत्र में जदीद खोज से गहरा रब्त रखता है और उसमें किसी क़िस्म का टकराव नहीं है। उन्होंने विस्तार से कहा कि अलबत्ता कुछ आयतें ऐसी ज़रूर हैं जिनकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता (साइंटिफ़िक़ एक्यूरेसी) के बारे में वैज्ञानिक, किसी भी त़रह़ का तब्सरा (विश्लेषण) करने में असमर्थ हैं। वो यह नहीं बतला सके कि वो बातें सही हैं या ग़लत, चूँकि वो ख़ुद भी उस जानकारी के बारे में नहीं जानते जो उन आयतों में मौजूद है। आधुनिक लेखन और अध्ययन, जो कि भ्रूण विज्ञान से तअ़ल्लुक़ रखता है, उनमें इस जानकारी के बारे में कोई ज़िक्र मौजूद नहीं है। ऐसी ही एक आयत नीचे लिखी हुई है,

Scanned by CamScanner

اَقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢

'पढ़िये! अपने रब के नाम से, जिसने पैदा किया (तख़्लीक़ की)। जिसने इन्सान को लीच (जोंक) जैसे ख़ून के लोथड़े से बनाया।'

(अल अ़लक़ : 1-2)

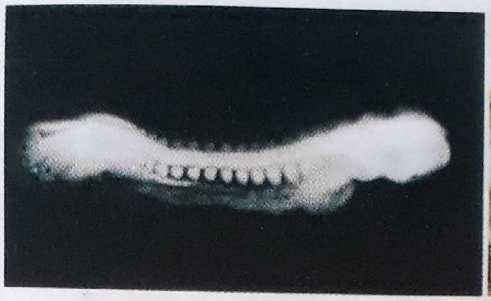

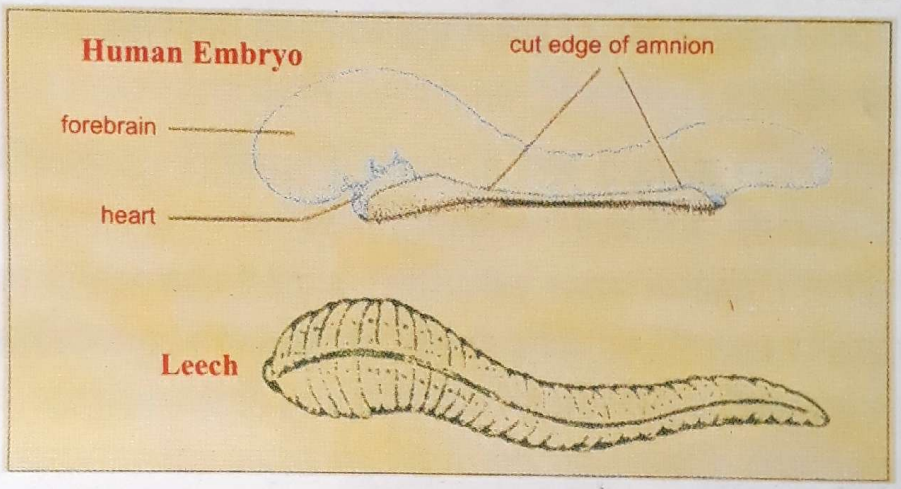

लफ़्ज़ **'अलक़'** के मा'नी ख़ून के जमाव होने के अ़लावा यह भी मा'नी निकलते हैं कि गोया कोई चिपकने वाली चीज़, जोंक की तरह कोई माद्दा है।

डॉ. कीथ मूरै को कोई जानकारी नहीं थी कि शुरूआती दौर (इनीशियल स्टेजेज) में भ्रूण (एम्ब्रायो) लीच (जोंक) की शक्ल धारण किये हुए होता है। इसकी तस्दीक़ करने के लिये उन्होंने भ्रूण की प्रारम्भिक स्थिति का अपनी लेबोरेटरी के बहुत पावरफुल माइक्रोस्कोप के ज़रिये अध्ययन किया और फिर जो कुछ उन्होंने निष्कर्ष हासिल किया उसकी तुलना लीच के एक डायाग्राम से की और जब उन्हें यह पता चला कि दोनों में हद–दर्जा मुशाबिहत (समरूपता) मौजूद है, तो वे तअ़ज्जुब में पड़ गये।

इसी तरह उन्होंने भ्रूण विज्ञान से जुड़ी वसीअ़ (विस्तृत) जानकारी कुर्आन से हासिल की, जो कि पहले उनके इल्म में नहीं थी। डॉ. कीथ मूरै ने क़रीब 80 सवालों के

Scanned by CamScanner

जवाब दिये, जिनका तअ़ल्लुक़ भ्रूण विज्ञान से है और जिनका ज़िक्र क़ुर्आन व हदीस में किया गया। यह बात ग़ौरतलब है कि क़ुर्आन व हदीस में भ्रूण विज्ञान के क्षेत्र में जो जानकारी मौजूद हैं वो पूरी तरह आधुनिक खोजों से रब्त और समरूपता रखती है। डॉ. मूरै ने कहा, 'यह सवालात अगर मुझसे तीस साल पहले पूछे गये होते तो मैं वैज्ञानिक जानकारियों और तथ्यों के अभाव में उनमें से आधे का भी जवाब नहीं दे पाता।

डॉ. कीथ मूरै ने पहले **'द डेवेलपिंग ह्यूमन'** नामी किताब लिखी थी। क़ुर्आन से नई जानकारी हासिल होने के बाद उन्होंने सन् 1982 में **'द डेवेलपिंग ह्यूमन'** किताब का तीसरा एडीशन (संस्करण) शाए किया। इस किताब को 'बेस्ट मेडिकल बुक' का एवार्ड मिला, हालांकि किताब के तीनों संस्करण एक ही लेखक द्वारा लिखे गए थे। इस किताब का दुनिया की अनेक प्रमुख भाषाओं में तर्जुमा किया गया और इसे मेडिकल स्टडीज के फ़र्स्ट इयर में भ्रूण विज्ञान की टेक्स्ट बुक (कोर्स) के रूप में पढ़ाया जाता है।

सन् 1981 में सऊदी अ़रब के दम्माम में आयोजित हुई सातवीं मेडिकल कॉन्फ्रेंस के दौरान डॉ. मूरै ने कहा, 'यह निहायत ही ख़ुशी की बात है कि मैंने क़ुर्आन की आयात को मानव विकास (ह्यूमन डेवेलपमेण्ट) के बारे में बहुत मददगार पाया। अब यह बात मुझ पर साफ़ तौर पर वाज़ेह हो गई है कि ये आयात अल्लाह की जानिब से मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई होंगी क्योंकि भ्रूण विज्ञान के बारे में कई सदियाँ गुज़र जाने के बाद तक सम्पूर्ण ज्ञान का पता नहीं लगाया जा सका था। यह बात मेरे लिये ष़ाबित करती है कि मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) ज़रूर अल्लाह के रसूल हुए होंगे।'

डॉ. जो लाये सिम्सन जो कि अमेरिका के हाउस्टन के बैलर कॉलेज ऑफ़ मेडिसिन में डिपार्टमेण्ट ऑफ़ ऑब्स्ट्रेटिक्स एण्ड गाइनाकॉलोजी के चैयरमैन हैं, वो यह दावा करते हैं, 'ये बातें (अहादीस), यानी मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) के क़ौल (कथन) उन वैज्ञानिक ज्ञान की बुनियाद पर हासिल नहीं की जा सकती थीं, जो कि लेखक के ज़माने में दस्तयाब थीं। इससे यह बात साबित होती है कि जेनेटिक्स यानी साइंस ऑफ़ रि–प्रोडक्शन (जनन विद्या) और इस्लाम के बीच कोई टकराव नहीं। लेकिन दरहक़ीक़त इस्लाम, विज्ञान की इस हद तक रहनुमाई कर सकता है कि परम्परागत वैज्ञानिक पहुँच के साथ दैवीय सन्देश को बढ़ा दिया जाए। क़ुर्आन में ऐसे तथ्य मौजूद हैं, जिनकी सच्चाई को सदियों बाद विज्ञान ने पहचाना है। इससे इस बात को

Scanned by CamScanner

सहारा मिलता है कि जो इल्म क़ुर्आन में बयान किया गया है वो अल्लाह की जानिब से हासिल हुआ है।

इन्सान की तख़्लीक़ पीठ और पसलियों के बीच से निकलने वाली एक बूंद से हुई है

فَلْيَنظُرِ ٱلْإِنسَٰنُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥ خُلِقَ مِن مَّآءٍ دَافِقٍ ۝٦ يَخْرُجُ مِنۢ بَيْنِ
ٱلصُّلْبِ وَٱلتَّرَآئِبِ ۝٧

'इन्सान को इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि उसकी तख़्लीक़ किस चीज़ से हुई है? वो पैदा किया गया है उछलते हुए पानी की एक बूंद से जो रीढ़ की हड्डी और पसलियों की हड्डी के बीच से निकलती है।'

(अत् तारिक़ : 5-7)

भ्रूण के मरहलों में, पुनरावृत्ति करने वाले नर और मादा के अँग, जैसे टेस्टीकल्स यानी अण्डकोष (मनी ख़ारिज करने वाले गदूद) और ऑवेरीज़ (अण्डा पैदा करने वाले अँग यानी अण्डाशय), गुर्दे के पास, रीढ़ की हड्डी और 11वीं व 12वीं पसली के बीच विकसित होना शुरू होते हैं; फिर वो नीचे उतरते हैं। फ़िमेल गोनाड्स (मादा की मनी के क़तरे) यानी ऑवरीज़ (अण्डाशय) कूल्हे पर जाकर ठहर जाती है। जबकि नर की मनी के क़तरे (मेल गोनाड्स) यानी ख़ारिजशुदा मनी के क़तरे (टेस्टीकल्स) इन्जुएल केनाल के ज़रिये, अअ़ज़ा–ए–तनासुल (स्क्रोटम) तक अपने नीचे उतरने की प्रक्रिया जारी रखते हैं।

बालिग़ लोगों में पुनरावृत्ति करने वाले अँग (क़तरे) के नीचे उतरने के बाद भी यह अँग (क़तरे) अपनी आसाबी और ख़ून की सप्लाई, पेट सम्बंधी (एब्डोमिनल) आओरटा से पाते रहते हैं, जो कि रीढ़ की हड्डी और पसलियों की हड्डियों के दर्मियान वाले हिस्से में स्थित है। पंछा ले जाने जाने वाली निकास नाली का मल और वीनस रिटर्न (शिरा सम्बंधी निकास) भी उसी हिस्से में जाते हैं।

Scanned by CamScanner

इन्सानों की तख़्लीक़ 'नुत्फ़ह' से होती है यानी द्रव (तरल) की बहुत छोटी मिक़्दार

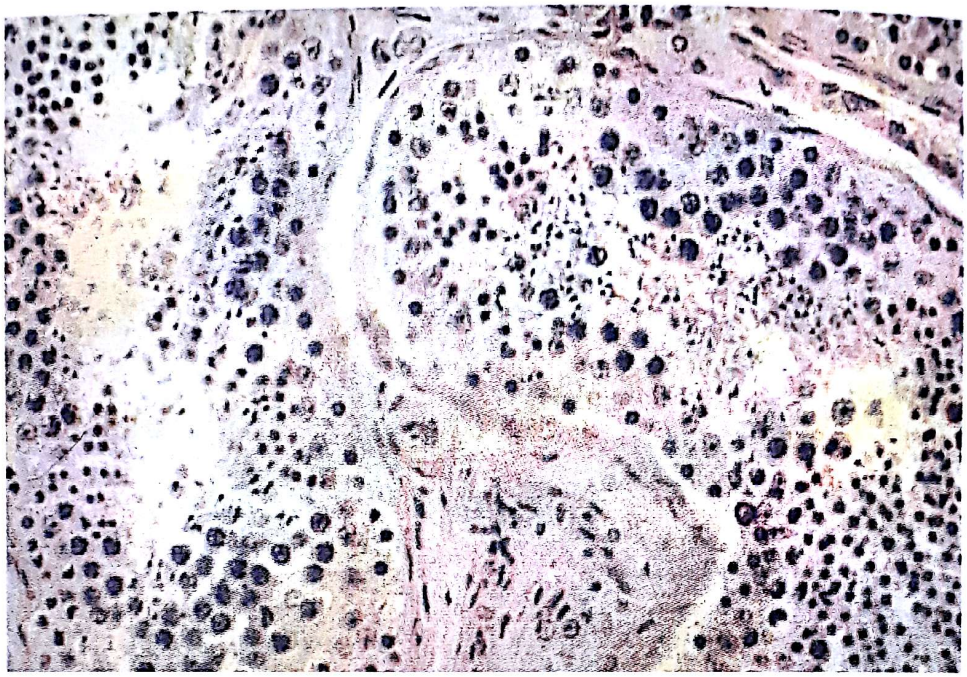

क़ुर्आने करीम में कम से कम ग्यारह मर्तबा यह बात दोहराई गई है कि इन्सान को **'नुत्फ़ह'** से पैदा किया गया है जिसके मा'नी होते हैं, द्रव (तरल) की एक बहुत छोटी सी मिक़्दार (मात्रा)। जैसे किसी कप को उण्डेलने के बाद भी मामूली सी बून्दें बची रह जाती है।

क़ुर्आन की बेशुमार आयात में इस बात का ज़िक्र किया गया है जिनमें अल हज्ज 5, अल मोमिनून 13, अन् नह्ल 4, अल कह्फ़ 37, अल फ़ातिर 11, या–सीन 77, अल मोमिन 67, अन् नज्म 46, अल क़ियामह 37, अद् दह्र 2 और सूरह अ–ब–स 19 शामिल हैं।

हालिया ज़माने में साइंस ने इस बात की तस्दीक़ की है कि ख़ारिजशुदा मनी के तीस लाख बीज में से ओवम (अण्डा) को फ़र्टीलाइज़ (निषेचित) करने के लिये। सिर्फ़ एक बीज की ज़रूरत होती है। इसका मतलब यह निकला कि फ़र्टिलाइज़ेशन (निषेचन) के लिये ख़ारिजशुदा मनी की मिक़्दार में से सिर्फ़ एक बटा तीस लाखवें हिस्से यानी 0.00003% की ज़रूरत होती है।

Scanned by CamScanner

इन्सानों की तख़्लीक़ 'सुलालह' से होती है यानी द्रव के सार से यानी तरल के अहमतरीन हिस्से से

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُۥ مِن سُلَٰلَةٍ مِّن مَّآءٍ مَّهِينٍ ﴿٨﴾

'और बनाया उसकी नस्ल को एक बहते हुए हक़ीर द्रव के सार से।'

(अस्सज्दा : 8)

अरबी लफ़्ज़ **'सुलालह'** के मा'नी होते हैं, 'सार (Extract)' यानी पूरी मिक़्दार में से सबसे अच्छा या अहमतरीन हिस्सा। हमें अब पता चला है कि उन लाखों स्पर्मों में से, जो इन्सान ने पैदा किये, फ़र्टीलाइज़ेशन (गर्भधारण) के लिये सिर्फ़ एक ही स्परमेटोज़न (अण्डे में पैवस्त होने वाले मनी के अहमतरीन हिस्से) की ज़रूरत होती है।

इसी एक स्पर्म (वीर्य) को, जो सर्वोत्तम होता है, क़ुर्आन में **'सुलालह'** कहा गया है। **'सुलालह'** के मा'नी बहते हुए द्रव में से नरमाई से निचोड़ा गया सत भी होता है। इस बहते हुए द्रव से मुराद नर व मादा, दोनों के जीवाणु (जरमिनल फ़्लुइड) से है जिनमें गैमिट्स (बीज) शामिल होते हैं। फ़र्टिलाइज़ेशन की क्रिया में ओवम (नारी का अण्डा) और स्पर्म (मर्द की मनी) दोनों की नरमाई से निचोड़कर निकासी की जाती है, उनके वातावरण (Climate) में से।

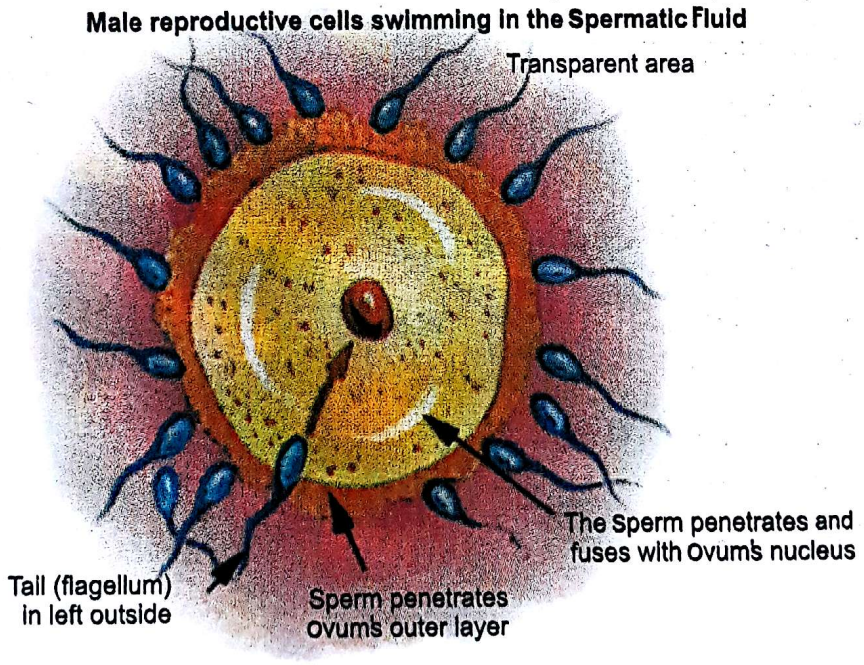

Scanned by CamScanner

इन्सान की तख़्लीक़ 'नुत्फ़तुन अम्शाज' यानी मिले–जुले पानी से की गई

नीचे लिखी क़ुर्आनी आयत का मुलाहिज़ा फ़र्माएं,

إِنَّا خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ

'बेशक मैंने इन्सान को मिली–जुली बून्द से पैदा किया।'

(अद् दह्र : 2)

अरबी में **'नुत्फ़तिन अमशाजिन्'** के मा'नी होते हैं, मिला हुआ तरल पदार्थ (मिक्सशुदा द्रव)। क़ुर्आन के कुछ मुफ़स्सिरीन के मुताबिक़, मिले हुए द्रवों से मुराद नर व मादा जनन पदार्थ का मिश्रण है। नर व मादा बीज (मनी) के मिलाप के बाद भी **'ज़ाइगोट (गर्भ धारित अण्डा)'** **'नुत्फ़ह'** ही रहता है। इसका मतलब यह भी है कि मूल उत्पत्तिजनक पदार्थ (तख़्लीक़ी शय) में स्पर्म के साथ–साथ अन्य चीज़ें भी मिली हुई होती हैं, जो मुख़्तलिफ़ गदूदों (ग्रन्थियों) से निकलती है।

लिहाज़ा **'नुत्फ़तिन अम्शाज'** का मतलब यह हुआ कि नर व मादा के उत्पतिजनक पदार्थ के बीज तत्व की बहुत छोटी सी मात्रा, जिसमें अन्य ग्रन्थियों से निकले हुए पदार्थ भी शामिल हैं।

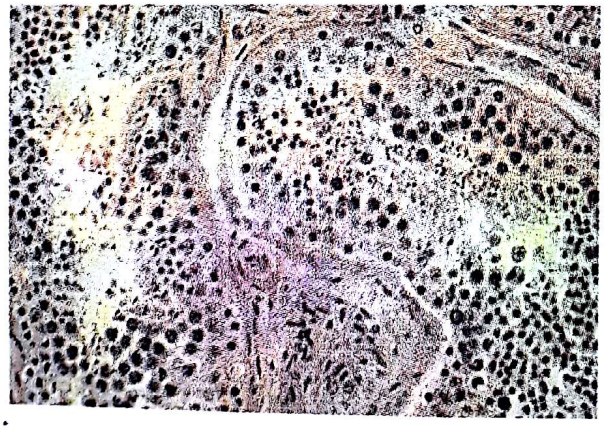

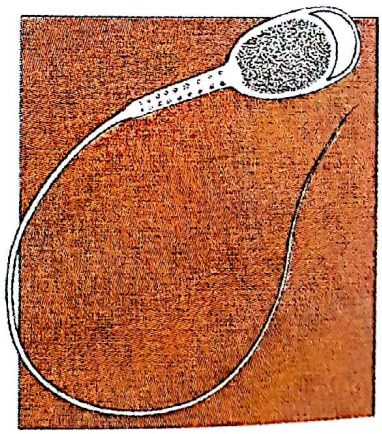

Scanned by CamScanner

लैंगिकता का निर्धारण

गर्भ में ठहरे हुए भ्रूण का लिंग, नर के नर के नुत्फ़ह की क़ुदरती बनावट पर आधारित होता हहै न कि मादा के ऑवम (अण्डे) पर। बच्चों के लिंग, नर है या मादा, इस बात पर मुन्हसिर (आधारित) है कि क्रोमोसोम्स की 23वीं जोड़ी 'XX' है या 'XY' है। मादा के अण्डे (ऑवम) में दाख़िल होने वाला स्पर्म अगर 'XX' है तो लड़की पैदा होगी और अगर 'XY' है तो लड़का पैदा होगा।

وَأَنَّهُۥ خَلَقَ ٱلزَّوْجَيْنِ ٱلذَّكَرَ وَٱلْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾ مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾

'बिलाशुब्हा उसने नर व मादा की जोड़ियाँ बनाई, मनी के एक क़तरे से, जब वह ठहर जाता है (अपनी जगह पर)।' (अन्नज्म : 45-46)

अरबी लफ़्ज़ **'नुत्फ़ह'** के मा'नी होते हैं, तरल पदार्थ की बहुत छोटी सी मिक़्दार और 'तुम्ना' के मा'नी होते हैं, ख़ारिजशुदा या रोपा हुआ (बोया गया)। लिहाज़ा **'नुत्फ़ह'** से मुराद ख़ास तौर पर मर्द की मनी से है क्योंकि वह ख़ारिजशुदा (बहिष्कृत किया हुआ) होता है। क़ुर्आन बयान करता है,

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ ٱلزَّوْجَيْنِ ٱلذَّكَرَ وَٱلْأُنثَىٰٓ ﴿٣٩﴾

'क्या वह एक गाढ़े पानी का क़तरा न था जो टपकाया गया, फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया। अल्लाह ने उसे पैदा किया और दुरुस्त बना दिया, फिर उससे जोड़े यानी नर व मादा बनाए।'

(अल क़ियामह : 37-39)

इस आयत में भी **'नुत्फ़तिन मिम् मनिय्यिन'** से मुराद मर्द के स्पर्म से है जिससे लैंगिकता सुनिश्चित होती है।

भारतीय उपमहाद्वीप में दादियाँ लड़की पर लड़के की पैदाइश को तरजीह देती है और लड़का पैदा न होने पर आम तौर पर बहू को क़ुसूरवार ठहराती है। जबकि बच्चों के

Scanned by CamScanner

लिंग की निर्भरता ख़ालिस तौर पर मर्द के स्पर्म पर निर्धारित होती है न कि औरत के अण्डे पर। इसलिये अगर बुराई करनी ही है तो वे अपने बेटों की करें न कि अपनी बहुओं की क्योंकि क़ुर्आन और विज्ञान दोनों ही ने यही बतलाया है कि बच्चे के लिंग का निर्धारण करने के लिये मर्द की मनी ही ज़िम्मेदार है।

भ्रूण की हिफ़ाज़त अंधेरियों के तीन पर्दों में

يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَٰتٍ ثَلَٰثٍ

'वही बनाता है तुम्हें, तुम्हारी माँओं के रहम (गर्भ) में, एक के बाद दूसरे मरहलों में, अंधेरियों के तीन पर्दों में।' (अज़् ज़ुम्र : 6)

डॉ. कीथ मूरे के मुताबिक़ क़ुर्आन ने अंधेरियों के जिन तीन पर्दों का ज़िक्र किया है, वह हस्ब–ज़ैल है–

(1). माँ के पेट की दीवार (बाहरी चमड़ी)

(2). बच्चेदानी की दीवार

(3). एम्नियो कोरयोनिक मेम्ब्रेन यानी वो अन्दरूनी झिल्ली जिसमें बच्चा पलता है।

Scanned by CamScanner

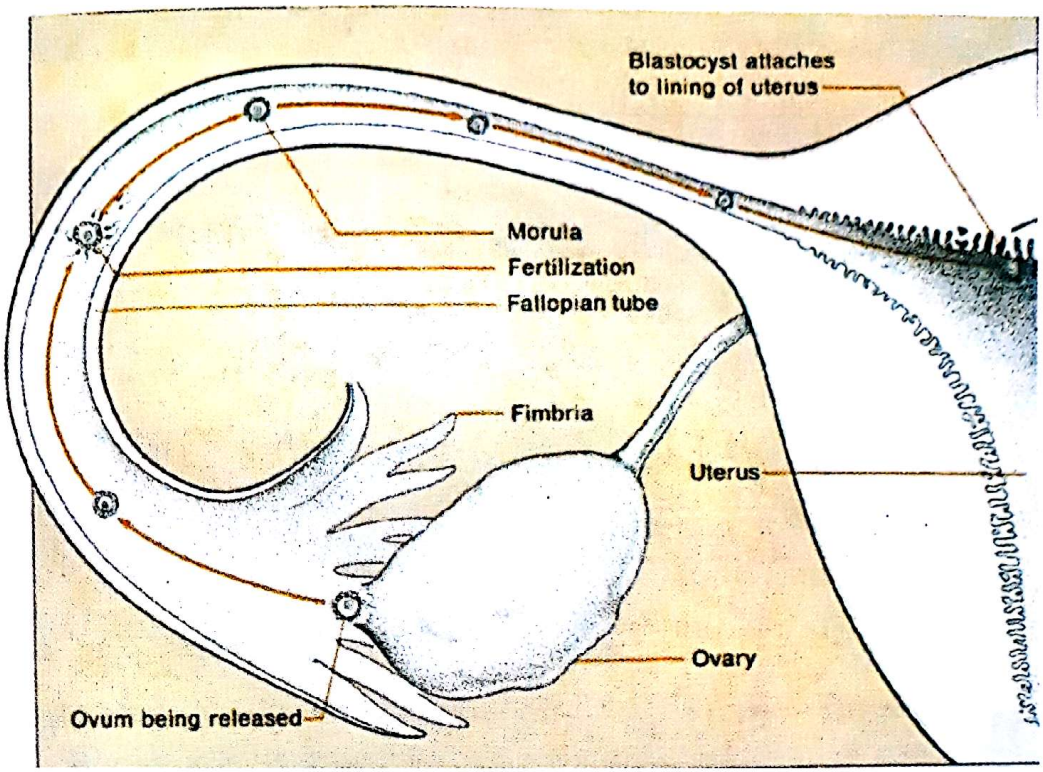

भ्रूण के मरहले :

وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن سُلَٰلَةٍ مِّن طِينٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنَٰهُ
نُطْفَةً فِى قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا ٱلنُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا
ٱلْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا ٱلْمُضْغَةَ عِظَٰمًا فَكَسَوْنَا
ٱلْعِظَٰمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَٰهُ خَلْقًا ءَاخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحْسَنُ
ٱلْخَٰلِقِينَ ﴿١٤﴾

'बिलाशुब्ह मैंने इन्सान की तख़्लीक़ की, चिकनी मिट्टी के सार से, फिर उसे नुत्फह बनाकर महफ़ूज़ जगह में मज़बूती से ठहरा दिया; फिर मैंने उस मनी को जमा हुआ गाढ़े ख़ून का लोथड़ा बना दिया, फिर उस ख़ून के लोथड़े को गोश्त का टुकड़ा कर दिया, फिर गोश्त के टुकड़े से हड्डियाँ पैदा कर दीं, फिर हड्डियों को मैंने गोश्त पहना दिया और फिर विकसित किया मैंने उसमें से एक दूसरा जानदार। बरकतों वाला है वो अल्लाह, जो

Scanned by CamScanner

सबसे बेहतर बनाने वाला है।' (अल मोमिनून : 12-14)

इन आयात में अल्लाह ने फ़र्माया कि इन्सान की तख़्लीक़ द्रव की छोटी सी मात्रा से हुई है जो एक महफूज़ आरामगाह में मज़बूती से ठहराया (बसाया) गया है, जिसके लिये क़ुर्आन में **'क़रारिन मकीन'** का अरबी लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है।

माँ की कोख (बच्चेदानी) को, पीछे की तरफ़ से रीढ़ की हड्डी और कमर के पुट्ठों (माँसपेशियों) के ज़रिये उसे अच्छी तरह सहारा देकर सुरक्षित कर दिया गया है।

भ्रूण, एक विशेष थैली **(एम्नियोटिक मेम्ब्रेन)**, जिसमें कि एक विशेष प्रकार का द्रव भरा होता है, में महफूज़ तरीक़े से रहता है। इस तरह भ्रूण इन्तिहाई महफूज़ जगह पर ठहरा हुआ होता है।

उत्पत्तिजनक तरल (मनी/वीर्य) की छोटी सी मात्रा **'अ–ल–क़'** में परिवर्तित होती है, **'अ–ल–क़'** यानी ऐसी चीज़ जो चिपकती है या पकड़ लेती है। इससे मुराद जमा हुआ पदार्थ भी है, वैज्ञानिक नज़रिये से दोनों सही हैं क्योंकि गर्भ शुरूआती दर्जे में दीवार को पकड़ लेता है या उससे चिपका रहता है और लीच (जोंक) की तरह ख़ून चूसकर अपनी ख़ुराक़ हासिल करता है और नाल के ज़रिये उसे ख़ून की सप्लाई जारी रहती है।

लफ़्ज़ **'अ–ल–क़'** का तीसरा मा'नी ख़ून की फुटकी (थक्का) है जो हमल (गर्भ) ठहरने के तीसरे–चौथे सप्ताह तक रहता है। फिर धीरे–धीरे यह फुटकी लोथड़े का रूप इख़्तियार कर लेती है।

सन् 1677 में **हैम** और **लियू वैनहॉक** पहले साइंसदाँ हुए जिन्होंने स्पर्म का एक शक्तिशाली ख़ुर्दबीन (सूक्ष्मदर्शी, माइक्रोस्कोप) के ज़रिये निरीक्षण किया। उनका यह ख़याल था कि सैल (जीवकोश) में एक छोटी साइज़ का इन्सान होता होगा जो कि बच्चेदानी में पलता है और फिर धीरे–धीरे नवजात बच्चे की तरह हो जाता है। इस नज़रिये को **'परफ़ोर्मेशन थ्योरी'** के नाम से जाना जाता था। जब साइंदानों को पता चला कि मादा बीज (अण्डे) की साइज़, नर बीज से बड़ी होती है तो **मिस्टर डी ग्राफ़** और उनके साथियों ने सोचा कि एक छोटा सा इन्सान ऑवम (अण्डे) के अन्दर है। इस तहक़ीक़ का इजहार, कि माँ और बाप के नुत्फ़ह के मिलने से हमल ठहरता है, 18वीं सदी में **मापर टूइस** नामक एक वैज्ञानिक ने किया।

'अ–ल–क़' बाद में **'मुज़्गह'** में तब्दील होता है, जिसके मा'नी है, चबाई

Scanned by CamScanner

हुई कोई चीज़ (जिस पर दाँतों के निशान बने हुए हों)। इसका एक मतलब यह भी है कि कोई चीज़ जो लिजलिजी हो और छोटी हो, जिसे मुँह में डाला जा सके, जैसे च्यूइंग गम।

यह दोनों वज़ाहतें साइंस के ऐतबार से दुरूस्त है। **डॉ. कीथ मूरै** ने एक प्लास्टर सील (लेप की चपड़ी) का एक टुकड़ा लिया और उसे शेप (स्वरूप) व साइज़ में ऐसा रूप दिया जैसे कि वह शुरूआती दौर का पूर्णकाय भ्रूण हो और फिर चबाया अपने दाँतों में ताकि वह '**मुज़्गह**' की शक्ल इख़्तियार करे। उन्होंने उसकी तुलना पूर्णकाय भ्रूण के इब्तिदाई मरहले के फ़ोटोग्राफ़्स से की। दाँतों के निशान मुशाबिहत रखते थे '**सोमाइटस**' से, जो रीढ़ की हड्डी की रचना का इब्तिदाई ढाँचा होता है।

यह अरबी लफ़्ज़ '**मुज़्गह**' हड्डियों में तब्दील किया जाता है फिर हड्डियों को पूरा माँस या माँसपेशी (लहम) पहनाया जाता है। फिर अल्लाह बनाता है उसे दूसरा जानदार।

प्रोफ़ेसर मारशल जॉन्सन अमेरिका के प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक हैं और वे

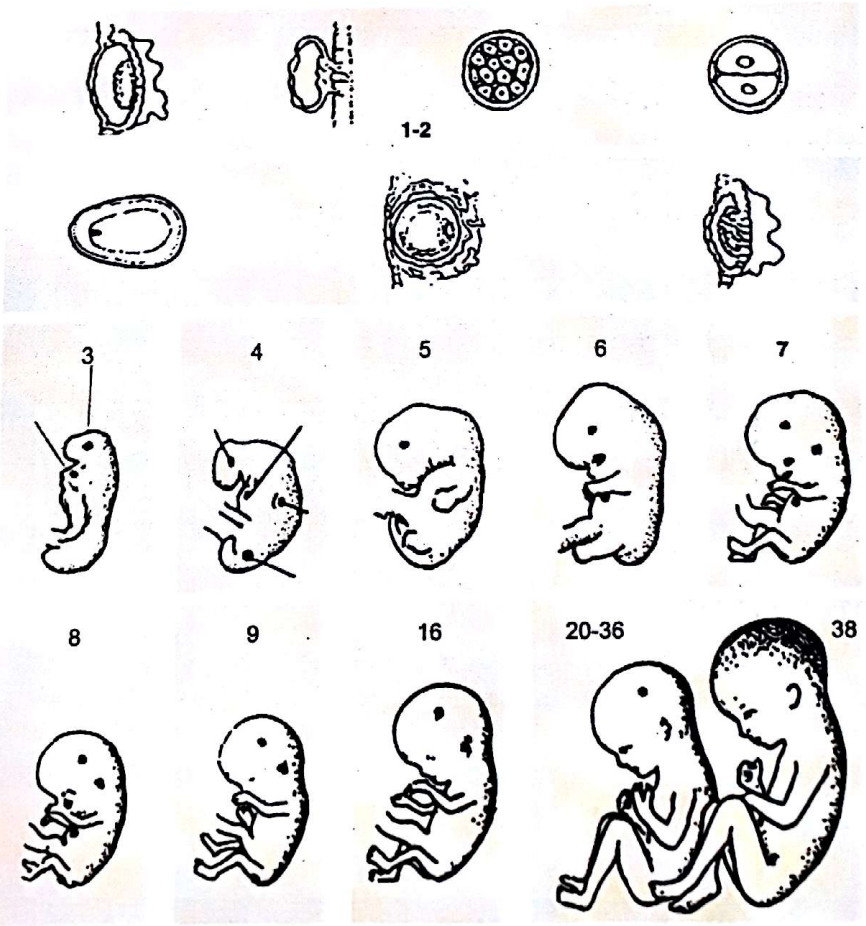

Scanned by CamScanner

डिपार्टमेण्ट ऑफ़ ऐनाटॉमी (शरीर रचनाशास्त्र का एक विभाग) के विभागाध्यक्ष हैं, वे फ़िलाडेल्फ़िया में स्थित थॉमस जैफ़रसन यूनिवर्सिटी में डेनियल इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर भी हैं। उनसे क़ुर्आन की उन आयतों, जो भ्रूण विज्ञान से सम्बंधित हैं, पर तब्सरा करने को कहा गया। उन्होंने कहा कि क़ुर्आन की वह आयात जिनमें भ्रूण सम्बंधी मरहलों का वर्णन पेश किया गया है, उनका वैज्ञानिक अनुसंधान के मुताबिक़ होना, कोई इत्तेफ़ाक़िया सहमति या आकस्मिक घटना नहीं हो सकती है। उन्होंने कहा कि मुमकिन है कि मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पास एक शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी (पावरफुल माइक्रोस्कोप) रहा हो। इस पर उन्हें याद दिलाया गया कि क़ुर्आन का नुज़ूल 1400 साल पहले हुआ था और माइक्रोस्कोप की खोज, मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) का ज़माना गुज़रने के सदियों बाद हुई। इस पर **प्रोफ़ेसर जॉन्सन** ठट्ठा लगाकर हंसे और तस्लीम किया कि जो पहला माइक्रोस्कोप वजूद में आया, वह भी चीज़ों की मात्रा दस गुना से ज़्यादा बड़ा करके नहीं दिखा सकता था और एक साफ़ तस्वीर नहीं पेश कर सकता था।

इसके बाद उन्होंने कहा, **'मुझे इस नज़रिये में कोई कठिनाई महसूस नहीं होती है कि मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) के क़ुर्आन बयान करने और सुनाने में किसी ग़ैबी ताक़त (दैवीय शक्ति) का हस्तक्षेप शामिल था।'**

डॉ. कीथ मूरै के मुताबिक़, पूरी दुनिया में भ्रूण विकास के मरहलों के बारे में जो आधुनिक वर्गीकरण इख़्तियार किया गया है, वह ऐसा नहीं है कि उसे आसानी से समझा जा सके क्योंकि वह संख्या की बुनियाद पर मुख़्तलिफ़ मरहलों को पहचानता (समझता) है जैसे पहला मरहला, दूसरा मरहला वग़ैरह। क़ुर्आन में गर्भ के परवरिश पाने के विभिन्न चरणों, भ्रूण की आकृति , रूप–स्वरूप और बनावट की बुनियाद पर शानदार वैज्ञानिक ढंग से बयान किये गये हैं जो निहायत ही व्यावहारिक और समझ में आने वाले हैं। इन्सानी विकास के भ्रूण सम्बंधी मरहलों की वज़ाहत क़ुर्आन की नीचे लिखी हुई आयत में स्पष्ट की गई है,

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣٩﴾

'क्या वह एक गाढ़े पानी का क़तरह न था जो टपकाया गया? फिर

Scanned by CamScanner

बना वह जोंकनुमा एक लोथड़ा; फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया, ठीक–ठीक अंदाज़ में। और उसने उसके दो लिंग बनाए, नर व मादा।'

(अल क़ियामह : 37-39)

ٱلَّذِى خَلَقَكَ فَسَوَّىٰكَ فَعَدَلَكَ ۝٧ فِىٓ أَىِّ صُورَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٨

'जिस रब ने तुझे बनाया और ठीक–ठाक किया और फिर दुरुस्त और बराबर बनाया; जिस सूरत में चाहा तुम्हारी तरकीब की और तुमको ढाला (गढ़ा/जोड़ दिया)।'

(अल इन्फ़ितार : 7-8)

मुकम्मल और नामुकम्मल भ्रूण

'मुज़्गह' वाली हालत में, अगर गर्भ में एक चीरा लगाया जाए और आन्तरिक अवयवों का निरीक्षण किया जाए तो यह देखने में आएगा कि उनमें से ज़्यादातर अवयव बन चुके हैं जबकि दूसरे अभी तक मुकम्मल तौर पर नहीं बन पाए हैं।

प्रोफ़ेसर जॉन्सन के मुताबिक़, अगर हम भ्रूण की एक मुकम्मल तख़लीक़ (प्राणी) के रूप में वज़ाहत (वर्णन) करें तो, तब हम सिर्फ़ उसी अँग की वज़ाहत कर रहे होते हैं जो बन चुका है। अगर हम उसकी एक नामुकम्मल तख़लीक़ (अधूरी बनावट) के रूप में वज़ाहत करते हैं तो हम सिर्फ़ उसी हिस्से की वज़ाहत कर रहे होते हैं जो अभी तक नहीं बन पाया है। लिहाज़ा क्या वह एक मुकम्मल तख़लीक़ है या नामुकम्मल? भ्रूण सम्बंधी इस स्तर की क़ुर्आनी वज़ाहत से बेहतर कोई दूसरी वज़ाहत हो ही नहीं सकती। नीचे बयान की गई आयत में इसे कुछ हद तक मुकम्मल (आँशिक पूर्ण) व कुछ हद तक नामुकम्मल (आँशिक अपूर्ण) कहा गया है।

خَلَقْنَٰكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ

'मैंने बनाया तुम्हें मिट्टी से, फिर मनी के क़तरह से, फिर एक जोंकनुमा

Scanned by CamScanner

लोथड़े से, फिर गोश्त के एक छोटे से टुकड़े से, कुछ शक्ल में पूरे व कुछ तख़्लीक़ में अधूरे ताकि मैं तुम पर (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर कर दूँ।'
(अल हज्ज : 5)

वैज्ञानिक नज़रिये से हम यह जानते हैं कि वीर्य या नुत्फ़ह के विकास के शुरूआती मरहले (आरम्भिक चरण) में कुछ कोशिकाएं ऐसी होती हैं जिनका फ़र्क़ पहचाना जा सकता है और कुछ कोशिकाएं ऐसी होती हैं जिनका फ़र्क़ नहीं पहचाना जा सकता। यानी कुछ अँगों की रचना पूरी हो चुकी होती है और कुछ दूसरे ऐसे अंग भी हैं जिनकी रचना अभी नहीं हो पाई।

समाअ़त और बीनाई के एहसासात :

एक विकासशील इन्सानी भ्रूण में सबसे पहला जो एहसास (चेतना) विकसित होती है, वह है **'समाअ़त'** यानी सुनने की शक्ति। पूर्णकाय भ्रूण माँ के पेट में 24वें हफ़्ते से आवाज़ें सुन सकता है। फिर उसके बाद यानी 28वें हफ़्ते से उसमें बीनाई (दृष्टि) का एहसास विकसित होता है और रेटिना (आँख का अन्दरूनी पर्दा) रोशनी के प्रति संवेदनशील (सेंसिटिव) हो जाता है।

नीचे लिखी क़ुर्आनी आयात पर ग़ौर करें जिनका तअ़ल्लुक़ भ्रूण में एहसासात (चेतनाओं) के विकास से है,

وَجَعَلَ لَكُمُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَٱلْأَفْـِٔدَةَ ۚ

'और उसने दिये तुमको (मन की शक्ति के शो'बे) समाअ़त और बीनाई और समझ–बूझ।'
(अस् सज्दा : 9)

إِنَّا خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَٰهُ سَمِيعًۢا بَصِيرًا ﴿٢﴾

Scanned by CamScanner

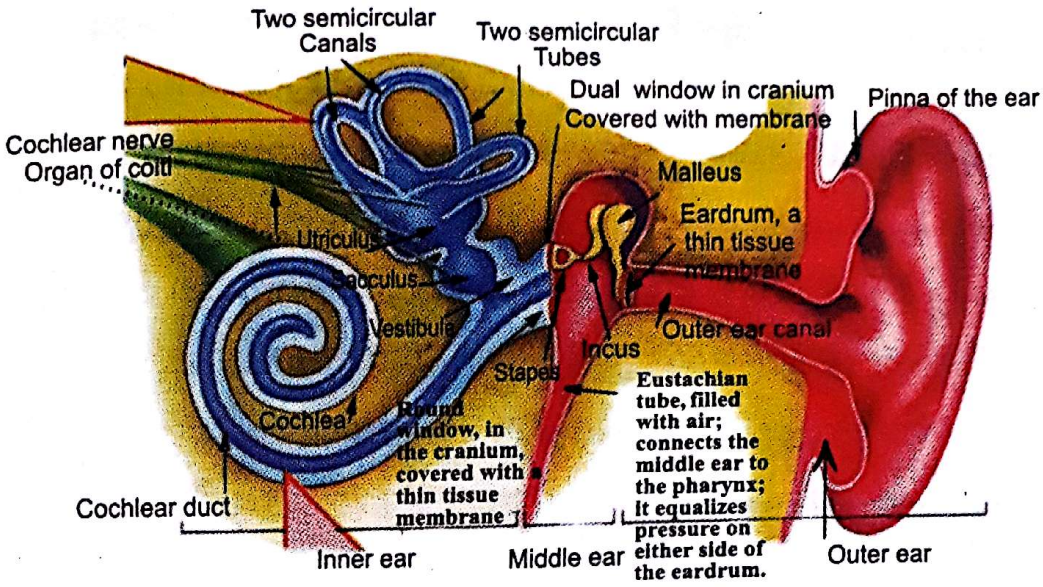

'बेशक मैंने पैदा किया इन्सान को, एक मिले–जुले पानी के क़तरे से, ताकि मैं उसे आजमाऊँ; तो मैंने उसे अता कीं समाअ़त और बीनाई की (ने'अमतें)।(सुनने और देखने वाला बनाया)' (अद्दह्र : 2)

وَهُوَ ٱلَّذِىٓ أَنشَأَ لَكُمُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَٱلْأَفْـِٔدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

'वही तो है जिसने बनाए तुम्हारे लिये (मन की शक्ति के शो'बे) समाअ़त (सुनना), बीनाई (देखना), छू कर महसूस करना और समझ–बूझ; (मगर) तुम हो कि बहुत कम शुक्रगुज़ारी करते हो।'
(अल मोमिनून : 78)

इन सभी आयतों में समाअ़त के एहसास (सुनने की चेतना) को बीनाई (देखने) से पहले ज़िक्र किया गया है। वाज़ेह हुआ कि कुर्आन की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) भ्रूण विज्ञान की जदीद खोज से पूरी त़रह़ मेल खाती है।

Scanned by CamScanner

أَيَحْسَبُ ٱلْإِنسَٰنُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُۥ ﴿٣﴾ بَلَىٰ قَٰدِرِينَ عَلَىٰٓ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُۥ ﴿٤﴾

'क्या इन्सान यह समझता है कि मैं नहीं जोड़ सकता उसकी हड्डियों को? नहीं! ऐसा नहीं है, मैं इस बात पर क़ादिर हूँ कि फिर दोबारा जोड़ दूँ, उसकी असली हालत में, यहाँ तक कि उंगलियों के पोरों को भी।'

(अल क़ियामह : 3-4)

इन्कार करने वाले बहस करते हैं, कि जब मरे हुए लोगों की हड्डियाँ बोसीदा (सड़–गल) चुकी होगी और ज़मीन में घुल–मिल चुकी होगी तब उन्हें दोबारा कैसे ज़िन्दा किया जाएगा? उनका ऐतराज़ है कि रोज़े–जज़ा यानी क़यामत के दिन हर एक को अलग–अलग कैसे पहचाना जा सकेगा? क़ादिरे–मुतलक़ (सर्वशक्तिमान) अल्लाह इसके जवाब में फ़र्माता है कि वह न सिर्फ़ हमारी हड्डियों को दोबारा जोड़ सकता है बल्कि वह तो हमारी अंगुलियों के पोर–पोर को नये सिरे से अस़ली ह़ालत में बना देगा। इसलिये इन्सान की पैदाइश नये सिरे से करना उसके लिये कोई मुश्किल नहीं है।

क़ुर्आन जब एक इन्सान की पहचान के बारे में जब बात करता है तो वह ख़ास तौर पर उंगलियों के पोरों का प्रमुखता से ज़िक्र क्यों करता है? सन् 1880 में **सर फ्रांसिस गोल्ट** की रिसर्च के बाद फिंगर प्रिण्टिंग पहचान क़ायम करने का साइंसी तरीक़ा बन गया। दुनिया के किसी भी दो इन्सानों का फिंगर प्रिण्ट हू–ब–हू नहीं मिल सकता। यही वजह है कि दुनिया भर की पुलिस फ़ोर्स मुजरिमों की पहचान के लिये फिंगर प्रिण्ट्स का इस्तेमाल करती है। 1400 से अधिक साल पहले इन्सान की फिंगर प्रिण्ट के नायाबपन (अद्वितीय होने) के बारे में किसे मालूम हो सकता था? यक़ीनन वह ख़ालिक़े–कायनात (ब्रह्माण्ड के स्रष्टा) के अ़लावा कोई दूसरा नहीं हो सकता, जिसने इस नायाबपन का ख़ुलासा अपनी किताब क़ुर्आन में किया।

Scanned by CamScanner

चमड़ी में मौजूद होती है, दर्द महसूस करने की ताक़त

अब तक यह समझा जाता था कि छूने का एहसास और दर्द को महसूस करने की क्षमता सिर्फ़ दिमाग़ पर आधारित होती है। लेकिन हाल ही में की गई नई खोजों से यह साबित होता है कि चमड़ी में ऐसी **'पेन रिसेप्टर्स सैल्स'** (दर्द महसूस करने वाली कोशिकाएं) होती हैं जिनके बिना कोई इन्सान दर्द को महसूस कर ही नहीं सकता।

जब किसी डॉक्टर को आग से झुलसे किसी मरीज़ के घावों की जाँच करनी होती है तो वह उसे सुई चुभोकर देखता है। अगर मरीज़ को दर्द का एहसास हो, तकलीफ़ महसूस हो तो डॉक्टर ख़ुश हो जाता है क्योंकि उससे यह इशारा मिलता है कि जलने से ज़्यादा गहरा ज़ख़्म नहीं हुआ है और **'पेन रिसेप्टर्स सैल्स'** सही सलामत मौजूद हैं। इसके बरअक्स अगर मरीज़ को दर्द का एहसास नहीं हो रहा हो तो उससे यह संकेत मिलता है कि ज़ख़्म गहरा है और दर्द महसूस करने वाली कोशिकाएँ बर्बाद हो चुकी हैं।

1400 से अधिक साल पहले नाज़िल हुए क़ुर्आन की नीचे लिखी आयत में दर्द महसूस करने वाली इन कोशिकाओं की मौजूदगी का हवाला मिलता है,

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ
جُلُودُهُم بَدَّلْنَـٰهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ
كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

'जिन लोगों ने मेरी आयतों को झुठलाया, मैं जल्द ही उन्हें आग में झौंक दूँगा, जब–जब उनकी चमड़ी जल जाएगी, मैं उसे नई चमड़ी से बदल दूँगा ताकि वह दर्दनाक अ़ज़ाब का मज़ा चखते रहें; बेशक अल्लाह हर चीज़ पर ग़ालिब और हिकमत वाला है।' (अन् निसा : 56)

थाइलैण्ड की **'च्याँग माई यूनिवर्सिटी'** के एनाटॉमी विभाग के अध्यक्ष **प्रोफ़ेसर टागाटा तेजासन** ने अपने वक़्त का ज़्यादातर हिस्सा **'पेन रिसेप्टर्स'** की रिसर्च पर ख़र्च किया। उन्हें तअ़ज्जुब हुआ और वे यक़ीन नहीं कर पाए कि क़ुर्आन में यह

Scanned by CamScanner

साइंसी तहक़ीक़ 1400 से अधिक साल पहले बयान की जा चुकी है। फिर बाद में उन्होंने इस ख़ास़ कुर्आनी आयत के तर्जुमे की तहक़ीक़ व तस्दीक़ की। प्रोफ़ेसर तेजासन कुर्आनी आयत की वैज्ञानिक सटीकता (साइंटिफ़िक़ एक्यूरेसी) से इतने ज़्यादा मुतास्सिर हुए कि सऊदी अ़रब की राजधानी रियाज़ में **'कुर्आन व सुन्नत में वैज्ञानिक निशानियाँ'** के विषय पर आयोजित हुई आठवीं मेडिकल कॉन्फ़्रेंस में सबकी मौजूदगी में खुल्लम खुल्ला पुकार उठे,

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'ला–इलाहा इल्लल लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'

नहीं है कोई मअ़बूद (पूज्य) सिवाय अल्लाह के और मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

यानी उन्होंने इस कुर्आनी आयत के चमत्कार से प्रभावित होकर इस्लाम कुबूल करने का ऐलान कर दिया।

Scanned by CamScanner

Conclusion निष्कर्ष

कुर्आन में वैज्ञानिक यथार्थता (साइंसी हक़ाइक़) की मौजूदगी को महज़ एक इत्तिफ़ाक़ (संयोग) से तश्बीह (उपमा) देना, हिकमत (कॉमन सेंस) और साइंसी तहक़ीक़ के पूरी तरह ख़िलाफ़ होगा। नीचे लिखी आयत के ज़रिये कुर्आन पूरी इन्सानियत को दअ़वत देता है कि वह इस पूरी कायनात के बनाए जाने पर, ग़ौरो–फ़िक्र (चिन्तन–मनन) करे।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

'बेशक आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और रात व दिन के लगातार बदलाव में, दरहक़ीक़त अ़क़्लमन्दों के लिये निशानियाँ हैं।'

(आले इमरान : 190)

ये तमाम साइंसी शहादतें (वैज्ञानिक गवाहियाँ), कुर्आन के कलामे इलाही (ईश वाणी) होने को वाज़ेह (स्पष्ट) तौर पर साबित करती है। दुनिया का कोई भी इन्सान 1400 बरस पहले ऐसी कोई किताब नहीं बना सकता था जिसमें उन तहक़ीक़शुदा साइंसी हक़ाइक़ (ठोस वैज्ञानिक वास्तविकताओं) से तअ़र्रुफ़ (परिचय) कराया गया हो। ख़ास़ तौर पर उन साइंसी हक़ीक़तों का, जिनकी खोज कुर्आन के नाज़िल होने के सदियों बाद हुईं।

कुर्आन किसी भी सूरत में कोई विज्ञान (साइंस/Scince) की किताब नहीं है बल्कि यह तो Signs (निशानियों) की किताब है। यह निशानियाँ इन्सानों को दअ़वत देती है कि वह ज़मीन पर अपने मक़सदे–हयात (जीवन उद्देश्य) को पहचानें और क़ुदरत से तालमेल बनाते हुए ज़िन्दगी गुज़ारे। हक़ीक़त में कुर्आन एक पैग़ाम है, उस अल्लाह की जानिब से, जो ख़ालिक (स्रष्टा) है और सारी कायनात को चलाने वाला है। हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) से लेकर हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) और आख़री नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम) तक, तमाम नबियों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की तालीम दी है।

कुर्आन और जदीद साइंस के बारे में काफ़ी कुछ लिखा जा चुका है और आगे

Scanned by CamScanner

भी रिसर्च इस फ़ील्ड में जारी है। इंशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा तो)! यह रिसर्च इन्सानियत की इस काम में मदद करेगी कि वह मुख़्तारे–कुल (सर्वशक्तिमान) अल्लाह के कलाम (क़ुर्आन) के क़रीबतर पहुँचे। इस छोटी सी किताब में चन्द साइंसी हक़ाइक़ (वैज्ञानिक वास्तविकताएं) शामिल की गई हैं, जो कि क़ुर्आन में पहले से मौजूद हैं। मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने इस विषय का हक़ अदा कर दिया है।

प्रोफ़ेसर तेजासन ने क़ुर्आन में मौजूद एक साइंटिफ़िक (वैज्ञानिक) निशानी पर इस्लाम क़ुबूल कर लिया। क़ुर्आन ही अल्लाह (ईश्वर) की किताब है इस सच्चाई को स्वीकार करने के लिये कुछ लोगों को दस निशानियों की ज़रूरत दरपेश हो सकती है और कुछ लोगों को सौ निशानियों की ज़रूरत पड़ सकती है। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो हक़ क़ुबूल करने में रज़ामन्द न हों, चाहे उनके सामने हज़ार निशानियाँ पेश कर दी जाएं। ऐसे लोगों के बारे में क़ुर्आन खुले लफ़्ज़ों में मज़म्मत (निन्दा) करते हुए बयान करता है कि,

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾

'ये लोग बहरे, गूँगे और अंधे हैं, जो नहीं लौटेंगे (राहे–रास्त) पर।'

(अल बक़र : 18)

यानी क़ुर्आन न सिर्फ़ एक इन्सान बल्कि पूरे समाज के लिये मुकम्मल ज़ाब्ता-ए-हयात (जीवन का सम्पूर्ण मार्गदर्शन) पेश करता है। अल्हम्दुलिल्लाह (तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये है)! क़ुर्आन पर आधारित जीवन–शैली, उन सारे तरीक़ों से बहुत बेहतर है जो एक मॉडर्न इन्सान ने अपनी ख़ालिस जहालत (विशुद्ध अज्ञानता) के चलते ईजाद कर लिये हैं। भला उससे बेहतर रहनुमाई और कौन दे सकता है, जो ब–ज़ाते ख़ुद पैदा करनेवाले (ख़ालिक़/स्रष्टा) ने दी है?

मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह मेरी इस आजिज़ाना कोशिश को क़ुबूल फ़र्माए, जिससे (यानी अल्लाह से) मैं रहम (करूणा) और रहबरी (मार्गदर्शन) की इल्तिजा करता हूँ, आमीन!

Scanned by CamScanner

हर क़िस्म का इल्म (ज्ञान) अल्लाह का अताकर्दा है लेकिन विज्ञान हमेशा से धर्म को नकारता रहा है. विज्ञान तहक़ीक़ (खोज) पर आधारित है. विज्ञान सुबूत चाहता है. इसे दीगर धर्मों की कमज़ोरी कहा जा सकता है कि उनकी दलीलें विज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, नतीजन विज्ञान उन तमाम धर्मों को ख़ुदाई (ईश्वरीय) मानने से इन्कार कर देता है. लेकिन इस्लाम बेबस नहीं क्योंकि यह अल्लाह का दीन है. विज्ञान ने पिछली दो–तीन सदियों में कुछ अहम खोजें कीं और फ़ख़्र से अपनी बरतरी (श्रेष्ठता) का ऐलान किया लेकिन तमाम वैज्ञानिक उस वक़्त ला–जवाब (निरूत्तर) हो गये जब उन्हें पता चला कि जिस खोज को वे जदीद (आधुनिक) बता रहे हैं, उसके बारे में क़ुर्आन में पहले ही से निशानदेही मौजूद है. इन जदीद खोजों से विज्ञान, इस्लाम के आगे, सर–ब–सुजूद (नत–मस्तक) नज़र आया.

प्रस्तुत किताब डॉ. ज़ाकिर नाइक की लेखनी का नायाब नमूना है. उन्होंने बड़ी मेहनत से विज्ञान की जदीद खोजों की तुलना क़ुर्आन की आयतों से करके मुस्लिमों को बताया कि वे अपने दीन पर यक़ीनन फ़ख़्र कर सकते हैं. मूल किताब अंग्रेज़ी में है, हमने बड़ी मेहनतों से इस किताब को आसान हिन्दी में पेश करने की कोशिश की है. इस किताब की तर्तीब अंग्रेज़ी किताब के समरूप दी गई है और रंगीन तस्वीरें इसके मैटर को समझना बहुत आसान कर देती है. अल्लाह से दुआ है कि यह किताब आपके इल्म में मजीद इज़ाफ़ा करने वाली साबित हो. जमियत अहले हदीस राजस्थान ने इसे आप तक पहुँचाया है, आपसे गुज़ारिश है कि आप अपनी दुआओं में उन लोगों को याद रखें जो तौहीद की दअवत को आम करने में दिन–रात जुटे हुए हैं. वस्सलाम,

अब्दुर्रहमान ख़िलजी

अमीर जमइयत अहले हदीस राजस्थान

Scanned by CamScanner